ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक-संरक्षक | वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं स्नेह सलिला माता भगवती देवी शर्मा

E-mail : news@pragyaabhiyan.info Website : www.pragyaabhiyan.info Phone - 09258369725 Fax : 01334-260866

वर्ष-२४, अंक-४ । १६ अगस्त २०११ । शांतिकुंज, हरिद्वार । वार्षिक चंदा ₹ ३०/-, विदेश में ₹ ४००/-

बस एक ही विकल्प-भाव संवेदना जागे, स्वार्थ-संकीर्णता भागे

हमारी अधपगलाई मनोदशा

वर्तमान कठिनाइयों के निराकरण हेतु आमतौर से सम्पदा, सत्ता और प्रतिभा के सहारे ही निराकरण की आशा की जाती है। इन्हीं तीनों का मुँह जोहा जाता है। इतने पर भी इनके द्वारा जो पिछले दिनों बन पड़ा है, उसका लेखा–जोखा लेने पर निराशा ही हाथ लगती है। प्रतीत होता है कि जब भी, जहाँ भी वे अतिरिक्त मात्रा में संचित होती हैं, वहीं एक प्रकार का उन्माद उत्पन्न कर देती हैं। उस अधपगलाई मनोदशा के लोग सुविधा संवर्धन के नाम पर उद्धत् आचरण करने पर उतारू हो जाते हैं और मनमानी करने लगते हैं। अपने–अपनों के लाभ के लिये उनकी उपलब्धियाँ खपती रहती हैं। प्रदर्शन के रूप में ही यदाकदा उनका उपयोग ऐसे कार्यों में लग पाता है, जिससे सत्प्रवृत्ति संवर्धन में कदाचित् कुछ योगदान मिल सके।

सम्पदा के द्वारा मिलने वाली सुविधाओं से कोई इनकार नहीं कर सकता, पर यह विश्वास कर सकना कठिन है कि जो पाया, उसका सदुपयोग ही बन पड़ेगा, उसके कारण दुर्व्यसनों का, आतंकवादी अनाचार का जमघट तो नहीं लग जायेगा?

दरिद्रता को सभी संकटों की एकमात्र जड़ बताने से तो बात नहीं बनती। समाधान तो तब हो, जब सर्वसाधारण को मनचाही सम्पदाओं से सराबोर कर देने का कोई सीधा मार्ग बन सके। यह तो सम्भव नहीं दीखता। इसी प्रकार यह भी दुष्कर प्रतीत होता है कि उच्च शिक्षित चतुर कहलाने वाला व्यक्ति अपनी विशिष्टताओं का दुरुपयोग न करेगा और उपार्जित योग्यता का लाभ सर्वसाधारण तक पहुँचा सकेगा। वह प्रपंचों से भरी कठिनाइयाँ खड़ी न करेगा।

सामर्थ्य को बहकने न दें

वैभव भी अन्य नशों की तरह कम विक्षिप्तता उत्पन्न नहीं करता, उसकी खुमारी में अधिकाधिक उसका संचय और अपव्यय के उद्धत् आचरण ही बन पड़ते हैं। ऐसी दशा में इस निश्चय पर पहुँचना अति कठिन हो जाता है कि उपर्युक्त त्रिविध समर्थतायें यदि बढ़ाने–जुटाने को लक्ष्य मानकर चला जाये तो प्रस्तुत विपन्नताओं से छुटकारा मिल सकेगा।

सच तो यह है कि समर्थता का जखीरा हाथ लगने पर तथाकथित बलिष्ठों ने ही घटाटोप की तरह छाये हुए संकट और विग्रह खड़े किये हैं। प्रदूषण उगलने वाले कारखाने सम्पन्न लोगों ने ही लगाये हैं। उन्हीं ने बेरोजगारी और बेकारी का अनुपात बढ़ाया है। आतंक, आक्रमण और अनाचार में संलग्न बलिष्ठ लोग ही होते हैं। युद्धोन्माद उत्पन्न करना, खर्चीले, माध्यमों के सहारे उन्हीं के द्वारा बन पड़ता है। प्रतिभा के धनी कहे जाने वाले वैज्ञानिकों ने ही मृत्यु–किरणों जैसे आविष्कार किये हैं। कामुकता को धरती से आसमान तक उछाल देने में तथाकथित कलाकारों की ही संरचनायें काम करती हैं। अनास्थाओं को जन्म देने का श्रेय बुद्धिवादी कहे जाने वालों के ही पल्ले बँधा है। नशेबाजी को घर–घर तक पहुँचाने में चतुरता के धनी लोग ही अपने स्वेच्छाचार का परिचय दे रहे हैं। इस प्रकार आँकलन करने पर प्रतीत होता है कि मूर्द्धन्यों, बलिष्ठों, सम्पन्न और प्रतिभाशालियों की छोटी–सी चौकड़ी ने अनर्थ थोड़े समय में ही खड़े किये हैं।

युगऋषि का चेतन प्रवाह, सतयुग धरती पर लायेगा।
मानव में देवत्व जगेगा, धन पावन हो जायेगा॥

ईश्वर के हैं अंश सभी, सबको खुशहाल बनाना है।
सब के हित में लगे सम्पदा, यह अभियान चलाना है॥

भ्रष्टाचार की जंग लड़ें हम, यह संघर्ष जरूरी है।
कमजोरों का बनें सहारा, इसमें क्या मजबूरी है?

> इस तथ्य को हजार बार समझा और लाख बार समझाया जाना चाहिये कि मनःस्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है। इसलिये यदि परिस्थितियों की विपन्नता को सचमुच ही सुधारना हो, तो जनसमुदाय की मनःस्थिति में दूरदर्शी विवेकशीलता को उगाया, उभारा और गहराई तक समाविष्ट किया जाय। यहाँ यह बात भी ध्यान रखने योग्य है कि मनःक्षेत्र एवं बुद्धि संस्थान भी स्वतन्त्र नहीं हैं, उन्हें भावनाओं, आकांक्षाओं, मान्यताओं के आधार पर अपनी दिशाधारा विनिर्मित करनी होती है। उनका आदर्शवादी उत्कृष्ट स्वरूप अन्तःकरण में भाव-संवेदना बनकर रहता है। यही है वह सूत्र, जिसके परिष्कृत होने पर कोई व्यक्ति ऋषिकल्प, देवमानव बन सकता है। यह एक ही तत्त्व इतना समर्थ है कि अन्यान्य असमर्थताएँ बने रहने पर भी मात्र इस अकेली विभूति के सहारे न केवल अपना, वरन् समूचे संसार की शालीनता का पक्षधर कायाकल्प किया जा सकता है।

एक मात्र विकल्प–भाव संवेदना

यहाँ साधन सम्पन्नता की निन्दा नहीं की जा रही है और न दुर्बलता के सिर पर शालीनता का सेहरा बाँधा जा रहा है। कहा इतना भर जा रहा है कि पिछड़ेपन को हटाने–मिटाने का एकमात्र यही उपाय नहीं है।

इस तथ्य को हजार बार समझा और लाख बार समझाया जाना चाहिये कि मनःस्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है। इसलिये यदि परिस्थितियों की विपन्नता को सचमुच ही सुधारना हो, तो जनसमुदाय की मनःस्थिति में दूरदर्शी विवेकशीलता को उगाया, उभारा और गहराई तक समाविष्ट किया जाय। यहाँ यह बात भी ध्यान रखने योग्य है कि मनःक्षेत्र एवं बुद्धि संस्थान भी स्वतन्त्र नहीं हैं, उन्हें भावनाओं, आकांक्षाओं, मान्यताओं के आधार पर अपनी दिशाधारा विनिर्मित करनी होती है। उनका आदर्शवादी उत्कृष्ट स्वरूप अन्तःकरण में भाव–संवेदना बनकर रहता है। यही है वह सूत्र, जिसके परिष्कृत होने पर कोई व्यक्ति ऋषिकल्प, देवमानव बन सकता है। यह एक ही तत्त्व इतना समर्थ है कि अन्यान्य असमर्थताएँ बने रहने पर भी मात्र इस अकेली विभूति के सहारे न केवल अपना, वरन् समूचे संसार की शालीनता का पक्षधर कायाकल्प किया जा सकता है। इक्कीसवीं–सदी के साथ जुड़े उज्ज्वल भविष्य का यदि कोई सुनिश्चित आधार है तो वह एक ही है कि जन–जन की भाव–संवेदनाओं को उत्कृष्ट, आदर्श एवं उदात्त बनाया जाय। इस सदाशयता की अभिवृद्धि इस स्तर तक होनी चाहिये कि सबको अपना और अपने को सबका मानने की आस्था उभरती और परिपक्व होती रहे।

संपदा सीमित है, आकांक्षा असीम

सम्पदा संसार में इस अनुपात में ही विनिर्मित हुई है कि उसे मिल–बाँटकर खाने की नीति अपनाकर सभी औसत नागरिक स्तर का जीवन जी सकें। साथ ही बढ़े हुए पुरुषार्थ के आधार पर जो कुछ अतिरिक्त अर्जन कर सकें, उससे पिछड़े हुओं को बढ़ाने, गिरते हुओं को उठाने एवं समुन्नतों को सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन हेतु प्रोत्साहित कर सकें।

अनावश्यक सम्पन्नता की ललक ही बेकाबू होने पर उन अनर्थकारी संरचनाओं में प्रवृत्त होती है, जिनके कारण अनेकानेक रंग–रूप वाले अनाचारों को व्यापक, विस्तृत और प्रचण्ड होते हुए देखा जा रहा है। लिप्साओं में किसी प्रकार कटौती करते बन पड़े, तो ही वह जुझारूपन उभर सकता है, जो अवांछनीयताओं से गुँथे और पटकनी देकर परास्त कर सके। जिन अभावों से लोग संत्रस्त दीखते हैं, उनसे निपटने की प्रतिभा उनमें उभारी जाये ताकि वे अपने पैरों खड़े होकर, दौड़कर स्पर्द्धा जीतते देखे जा सकें।

पतन निवारण की भी सोचें

आर्थिक अनुदान देने की मनाही नहीं है और न यह कहा जा रहा है कि गिरों को उठाने में, सहयोग देने में कोताही बरती जानी चाहिये। मात्र इतना भर सुझाया जा रहा है कि मनुष्य अपने आप में समग्र और समर्थ है। यदि उसका आत्मविश्वास एवं पुरुषार्थ जगाया जा सके तो इतना कुछ बन सकता है जिसके रहते याचना का तो प्रश्न ही नहीं उठता, बल्कि इतना बचा रहता है, जिसे अभावों और अव्यवस्थाओं की पूर्ति के लिये पर्याप्त मात्रा में लगाया जा सके।

इक्कीसवीं सदी भाव–संवेदनाओं के उभरने–उभारने की अवधि है। हमें इस उपेक्षित क्षेत्र को ही हरा–भरा बनाने में निष्ठावान माली की भूमिका निभानी चाहिये। यह विश्व उद्यान इसी आधार पर हरा–भरा, फला–फूला एवं सुषमा सम्पन्न बन सकेगा। आश्चर्य नहीं कि वह स्वर्ग लोक वाले नन्दन वन की समता कर सके।

**पुस्तक–सतयुग की वापसी,
पृष्ठ २४–२८ से संकलित**

भक्ति का सर्वोत्तम अनुदान-भाव संवेदना

ईश्वर का सबसे निकटवर्ती और सही स्थान अपना अंतःकरण है। उसे पाना हो तो कस्तूरी के मृग की तरह जहाँ-तहाँ भटकने की अपेक्षा यह उचित है कि अपनी नाभि को सूँघा जाय, अंतःकरण टटोला जाय।

परमात्मा जब भी आत्मा में मिलेगा, तो अपनी संवेदनाएँ शरणागत पर उड़ेले बिना न रहेगा। उसका कथन-परामर्श-मार्गदर्शन भली प्रकार सुनाई देने लगता है। आदान-प्रदान में अनुशासन भी जुड़ा रहता है। भगवान का स्मरण करते ही उसके परामर्श रूपी अनुदानों का प्रवाह आने लगता है। जागो और जगाओ, उठो और उठाओ, चलो और चलाओ, उभरो और उभारो, जियो और जिलाओ, उछलो और उछालो जैसे दुहरे आदेशों की झड़ी लग जाती है। उन्हें पूरा किये बिना किसी प्रकार, किसी क्षण चैन नहीं पड़ता। ऐसी ही स्थिति में रहते देखे जाते हैं वे भगवद् भक्त, जिन्हें तात्कालिक आदेश के रूप में नवसृजन का पर्वत अपने कंधों पर उठाकर चलना है। उन्हीं को युग पुरुष, युग देवता, युग सृजेता कहलाने का श्रेय एवं संतोष मिल सकता है। अच्छा हो उस उपलब्धि को स्वीकार करने से इंकार न किया जाय। द्वार पर खड़े सौभाग्य को ठोकर मार कर वापस न लौटाया जाये। **(वाङ्मय २९/४.६१)**

भारत की चेतना एक नये दिव्य तेजस्वी स्वरूप में प्रकट होने के लिए फड़फड़ा रही है

परिवर्तन के महान क्षण

युगऋषि के अनुसार हम उन सौभाग्यशालियों में से हैं, जो ईश्वरीय नवनिर्माण योजना के अंतर्गत '**परिवर्तन के महान क्षणों**' में जी रहे हैं। यह परिवर्तन विश्व व्यापी स्तर पर होना है, किन्तु इसमें भारत की अपनी विशेष भूमिका होने से इस दिशा में भारत और भारतवासियों के दायित्व कुछ खास हो जाते हैं।

योगी श्री अरविन्द ने स्पष्ट शब्दों में यह तथ्य व्यक्त किया है कि **"भारत को विश्व का आध्यात्मिक मार्गदर्शन करना ही होगा। इसलिए उसकी आध्यात्मिक चेतना फिर से नई ऊँचाइयाँ छुएगी। विश्व आज तकनीक अर्थशक्ति एवं सैन्य शक्तियों पर काफी कुछ निर्भर कर रहा है। इसलिए भारत को इन सभी धाराओं में भी विकसित होना होगा। यह सिद्ध करना होगा कि आध्यात्मिक चेतना सम्पन्न व्यक्ति ही इन तीनों विभूतियों, तकनीक, अर्थ शक्ति तथा सैन्य शक्ति को लोकहितकारी-कल्याणकारी दिशा में नियोजित कर सकते हैं।"**

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि **"भारत की चेतना को इतना उच्च स्तरीय होना है कि उसके सामने पिछले सारे कीर्तिमान धूमिल हो जाएँगे।"** युगऋषि ने स्पष्ट कहा है कि- **"आने वाला प्रज्ञायुग पिछले सतयुग से भी श्रेष्ठ सिद्ध होगा।"**

यह सब कार्य २१वीं सदी में ही सम्पन्न होने हैं। इसलिए दिव्य चेतना की स्थूल-सूक्ष्म हलचलें तीव्रतर हो उठी हैं। एक ओर दिव्य शक्तियाँ दिव्य प्रवृत्तियों के संचार में लगी हैं, तो वहीं दूसरी ओर आसुरी शक्तियाँ भी पूरी तत्परता से जीवन-मरण के इस संघर्ष में जुटी हुई हैं। यही कारण है कि एक ओर प्रतिभावानों में परमार्थ के लिए अपने स्वार्थों और सुखों में कटौती करके आगे आने का उत्साह उभर रहा है, वहीं दूसरी ओर स्वार्थी तत्त्व भी सज्जनों का मनोबल तोड़ने और अपनी तिकड़म बरकरार रखने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ना चाहते।

युगऋषि ने कहा है कि **भारत का उत्कर्ष सुनिश्चित है, किन्तु उसके लिए 'अग्नि परीक्षा' और 'प्रसव पीड़ा' जैसे कठिन दौर से गुजरना होगा। अग्नि परीक्षा में एक ओर भीषण ताप सहने की लाचारी होती है, तो दूसरी ओर विकार रहित खरा स्वरूप उभरने का उल्लास भी होता है। प्रसव पीड़ा में जहाँ प्रसूता के प्राणों पर बन आती है और सारे परिवार के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगती हैं, वहीं नवागत के प्रकट होने की उमंगें भी कम नहीं होतीं।**

भारत की चेतना इन दिनों ऐसे ही दौरों से गुजर कर एक नये तेजस्वी विश्ववन्द्य रूप में उभरने के लिए फड़फड़ा रही है। इन महान क्षणों में जी रहे हर व्यक्ति को इस सौभाग्य का अनुभव करना चाहिए कि नये सिरे से मनुष्य और मनुष्यता का भाग्य लिखने की महत्त्वपूर्ण भूमिका में हम भी कहीं भागीदार हैं। युगऋषि की दिव्य दृष्टि का लाभ उठाते हुए तदनुसार अपने संकल्पों और प्रयासों को बढ़ाते हुए हम निश्चित रूप से असाधारण श्रेय-सौभाग्य के भागीदार बन सकते हैं।

वर्तमान महाभारत

युगऋषि ने यह तथ्य कई बार खोला है कि महर्षि व्यास ने अपने ग्रंथ को 'महाभारत' नाम क्यों दिया? उस समय भी प्रतिभाशालियों की कमी नहीं थी, किन्तु बड़ी संख्या में प्रतिभाएँ अपने आदर्श से भटक गई थीं। उन्हीं में से प्रतिभाओं को परिष्कृत करके, उनके माध्यम से भटकी हुई प्रतिभाओं को निरस्त करके भारत को एक महान भारत के रूप में स्थापित करने का एक सदाशयता और साहस भरा सफल प्रयोग उसमें किया गया।

दुर्योधन सहित सभी कौरव प्रतिभा सम्पन्न थे, किन्तु अधिकार के मद में चूर प्रतिभा के दुरुपयोग पर तुले थे। धृतराष्ट्र भी प्रतिभा सम्पन्न थे, किन्तु मोहान्धता से ग्रस्त होकर अनुचित को उचित सिद्ध करना चाहते थे। भीष्म, द्रोण, कर्ण जैसे प्रतिभाशाली भी जाने-अनजाने में अपनी निष्ठा को जनहित की जगह सत्ताधारियों के साथ जोड़ने की भूल कर बैठे थे। अपनी भूल वे सुधार न सके। भारत की चेतना ने अंगड़ाई ली। उन्हीं कुरुवंशियों के बीच से कुछ प्रतिभाएँ आत्म परिष्कार के लिए सहमत हो गईं और महान भारत का प्रयोग **महाभारत** सफल हो गया।

आज भी उन्हीं दिनों जैसी परिस्थितियाँ हैं। सत्ता एवं सम्पत्ति के मद में चूर प्रतिभाएँ सभी जगह देखी जा सकती हैं। उन्हें रोकने की स्थिति में होते हुए भी कई समर्थ प्रतिभाएँ मोह या अविवेकपूर्ण प्रतिबद्धता के कारण घुटती देखी जा सकती हैं। लेकिन उन्हीं के बीच से कुछ प्रतिभाएँ मानवीय आदर्शों-राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देकर उभर रही हैं, उभरेंगी और भारत की अंतःचेतना फिर से महान भारत को उभारकर एक महान विश्व व्यवस्था का सूत्रपात करेगी।

युगऋषि ने स्पष्ट किया है कि **इस बार का महाभारत व्यक्ति प्रधान न होकर वृत्ति प्रधान होगा। उनके अनुसार सत्-असत् प्रवृत्तियों का संघर्ष हर क्षेत्र में, हर वर्ग में, हर घर में तथा हर व्यक्ति के अंदर होगा। इन दिनों उसकी भूमिका बन रही है तथा उसी प्रकार की प्रक्रियाएँ क्रमशः तीव्रतर होती जा रही हैं।**

सत्प्रवृत्तियों का सहगमन

समय के प्रभाव से क्रांतियों के नये-नये स्वरूप तेजी से उभर रहे हैं। चाहे जनहित की रचनात्मक प्रवृत्तियों के विस्तार की बात करें, चाहे समाज और प्रशासन में घुसी हुई दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन की बात करें, इनके लिए विभिन्न प्रकार के संगठनों में कुछ नया ही उत्साह उभर रहा है। यह उभरना भी चाहिए तथा इसे प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देकर प्रखर बनाने के प्रयास भी किए जाने चाहिए। किन्तु इसी के साथ पार्टी भेद, वर्ग भेद, सम्प्रदाय भेद से ऊपर उठकर सत्प्रवृत्तियों के सहगमन के व्यापक प्रयोग भी करने होंगे। सभी वर्गों में सत्, असत् दोनों प्रकार की प्रवृत्तियों के नर-नारी हैं। न कोई वर्ग दूध का धुला है और न कोई वर्ग सर्वथा त्याज्य है। जैसे देवताओं की विशेषताओं के समन्वय से **दुर्गाशक्ति** खड़ी हुई थी, उसी तरह अब देव प्रवृत्तियों, सत्प्रवृत्तियों के समन्वय से युग की दुर्गा का- **युगशक्ति** का स्वरूप उभरेगा। युगऋषि ने लाल मशाल का प्रतीक चिह्न उसी युगशक्ति को मूर्तिमान करने के लिए बनाया है।

सृजनात्मक आंदोलनों के साथ कुछ सुधारात्मक-संघर्षात्मक आन्दोलन भी खड़े हो रहे हैं। उन सभी की सफलता के लिए विभिन्न वर्गों में उभर रही सत्प्रवृत्तियों के परस्पर सहयोग-सहगमन से ही नये '**महान् भारत**' की सिद्धि संभव होगी। हमें उसी दिशा में संकल्प और साहस भरे कौशल के साथ आगे बढ़ना है। जनहित में जो आंदोलन उभर रहे हैं, उनमें मर्यादापूर्वक सहयोग करने के साथ ही उनसे सम्बद्ध व्यक्तियों तथा आम जनता को उस सिलसिले में युगऋषि द्वारा दिये गये समाधानपरक विचारों का बोध भी कराना चाहिए। इससे उनकी दिशा ठीक रहेगी तथा आंदोलनों को बल भी मिलेगा।

मालिक जागें, प्रजातंत्र को जीवन्त बनायें

स्थिति की समीक्षा

भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र है। अंदर से उभरी और बाहर से थोपी गई तमाम विसंगतियों के बीच भारत ने अपनी प्रजातांत्रिक पद्धति को टूटने नहीं दिया और अनेक कीर्तिमान बनाये, इसके लिए उसे वह सम्मान भी प्राप्त हुआ है, जिसका कि वह हकदार है।

किन्तु इन सबके बावजूद कुछ ऐसी चूकें हुई हैं, जिनके कारण हमारी प्रजा को पीड़ित और हमारे तंत्र को लज्जित भी होना पड़ा है। वह है मानवीय संस्कृति के मूल्यों और आदर्शों की उपेक्षा। इसके कारण भारत की भोली और मेहनतकश प्रजा की श्रमशक्ति और धनशक्ति का बड़ा भाग स्वार्थ की आपाधापी और भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ा जा रहा है।

इसके लिए शासक वर्ग-राजनीतिज्ञों तथा प्रशासनिक अधिकारियों को दोष दिया जाता है। एक हद तक सही भी है, किन्तु ध्यान रहे कि प्रजातंत्र में ये सब प्रजा के द्वारा चुने हुए या नियुक्त कर्मचारी भर हैं। असली मालिक तो प्रजा है। लेकिन जहाँ मालिक जागरूक न हो, वहाँ कर्मचारियों को स्वच्छन्द होते कितनी देर लगती है? स्थिति सुधारने के लिए जहाँ कर्मचारियों को कसा जाना जरूरी है, वहीं मालिकों को भी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक और कर्त्तव्यों में कुशल बनाना जरूरी है।

युगऋषि ने सत्तर के दशक में ही इन तथ्यों पर प्रकाश डालते हुए दो आलेख लिखे थे- **१. मालिकों को जगाओ, प्रजातंत्र बचाओ** तथा **२. जनता की सुप्रीम कोर्ट में समस्याओं के समाधान की गुहार।** उक्त दोनों आलेखों के सार-संक्षेप और महत्त्वपूर्ण अंशों को इस पत्रक में दिया जा रहा है। इससे युग निर्माण के परिजनों तथा राष्ट्रीय उत्कर्ष के लिए प्रयासरत **संगठनों, समाजसेवियों, नागरिकों को क्या करना है?, क्यों करना है?, और कैसे करना है?** की दिशा में सार्थक मार्गदर्शन प्राप्त हो सकेगा।

पाँच मूर्धन्य वर्ग- किसी भी समाज की व्यवस्था के सुयोग्य संचालन में युगऋषि ने पाँच मूर्धन्य वर्गों का जिक्र किया है। वे लिखते हैं-

"जैसे पाँच इन्द्रियाँ किसी व्यक्ति की सभी क्रियाओं का संचालन करती हैं, उसी प्रकार समाज की महत्त्वपूर्ण विधि-व्यवस्था का संचालन क्रमशः पुरोहित, शासक, मनीषी, कलाकार तथा श्रीमंत वर्ग के लोग करते हैं।" इनके कर्त्तव्यों का उल्लेख उन्होंने इस प्रकार किया है-

१. **पुरोहित वर्ग-** इनका कार्य प्रजा में उच्च आदर्शों, आध्यात्मिक नैतिक मूल्यों की स्थापना करना होता है।

२. **शासक वर्ग-** सुरक्षा एवं व्यवस्था इसके मूल कर्त्तव्य हैं। आजकल इस वर्ग के पास बहुत शक्तियाँ पहुँच गई हैं। साधनों तथा प्रतिभाओं को नियोजित करने का केन्द्रीकरण इसी वर्ग के पास हो गया है।

३. **मनीषी वर्ग-** विचारक, चिंतक, साहित्यकार इसी वर्ग में आते हैं। ये जीवन में श्रेष्ठ परिभाषाओं को स्थापित करने का, जन-जन में आदर्शों के प्रति उत्साह जगाने का कार्य कर सकते हैं।

४. **कलाकार वर्ग-** विभिन्न कलाओं से श्रेष्ठ मनोरंजन तथा हँसते-हँसाते उच्च भावनाओं का संचार यह वर्ग कर सकता है।

५. **श्रीमंत वर्ग-** इनका मुख्य कार्य आवश्यकता के अनुरूप उत्पादन एवं वितरण की व्यवस्था बनाना है। आज तो इनकी एक अलग पहचान बन गयी है। वे तो सम्पदा के बल पर भगवान को भी खरीदने का दावा करते हैं। शासक, पुरोहित मनीषी एवं कलाकार वर्ग को तो क्रीतदासों की तरह जेब में रखने की बातें किया करते हैं।

मानवता की फरियाद-

मानवीय आदर्शों की उपेक्षा देखकर मानवता ने पहले इन्हीं के दरबार में अपील की। लेकिन चूँकि उनमें अधिकांश भटकी हुई प्रतिभाओं में शामिल हैं, इसलिए सही समाधान की दिशा में कोई सार्थक पहल नहीं की जा सकी। युगऋषि ने इन्हें पाँच अदालतों की उपमा देते हुए लिखा है- **"मानवीय गरिमा सुरक्षा, स्थिरता और प्रगति के लिए उक्त पाँचों अदालतों में फरियाद कर चुकी है। सभी ने मौखिक सहानुभूति तो दिखाई, किन्तु कोई कारगर सहायता करने से इंकार स्तर की विवशता व्यक्त कर दी है। एक ने दूसरे को दोषी और अपने को निर्दोष ठहराया है।"**

"मानवीय गरिमा ने उपरोक्त पाँच छोटी अदालतों से निराश होकर अब जनता की सुप्रीम कोर्ट में अपनी फरियाद पेश की है। जाग्रत जनशक्ति की गरिमा असीम है। उसकी तुलना संसार की और किसी सामर्थ्य से नहीं हो सकती। सरकारें उसी के दिए टैक्स पर चलती हैं। श्रीमंतों को धनी बनाने में उसी का श्रम छन-छन कर तिजोरियों तक पहुँचता है। साहित्यकार उसी की खरीद पर जेबें भरते हैं। कलाकार उसी को रिझाकर कंधे उचकाते हैं। पुरोहितों की दान-दक्षिणा का दूध इसी गाय के थनों से निचोड़कर उपलब्ध होता है। अपराधी उसी को नोंच-खसोटकर अपना काम चलाते हैं..... पदार्थों की शक्ति प्रकृति के अंतराल में छिपी पड़ी है। परब्रह्म की सत्ता और महत्ता का प्रत्यक्ष दर्शन और मूल्यांकन करना हो, तो उसे मनुष्य समुदाय के पराक्रम में सन्निहित देखा जा सकता है।"

युगऋषि के अनुसार मानवता की फरियाद रंग लाने लगी है। जागरूक जनमत अब दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन और सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन के लिए आतुर हो उठा है। लेकिन उन्हें अभी अनेक संदर्भों में जागरूक एवं प्रशिक्षित करना जरूरी है।

मालिक जागें- युगऋषि ने प्रजातंत्र की मालिक प्रजा को जागरूक बनाने के लिए कुछ सूत्र इस प्रकार दिए हैं-

➲ मालिकों-मतदाताओं को यह जानना चाहिए कि अपने कर्मचारी कैसे रखने हैं और नियुक्ति के पूर्व उनकी जाँच पड़ताल कैसी की जाए? झाँसे में आकर वोट न देने की दृढ़ता भी होनी चाहिए।

➲ नियुक्त कर्मचारियों के कार्य पर कड़ी निगाह रखने तथा भूल होने पर उन्हें समुचित दण्ड देने की कारगर व्यवस्था होनी चाहिए। इन दिनों इस हेतु सरकारी तथा लोकसेवी प्रतिनिधियों द्वारा कुछ ऐसे मजबूत नियम बनाने के प्रयास चल भी रहे है।

➲ यह तो शुरुआत है। आगे तो चुनाव पद्धति को ऐसा रूप देना पड़ेगा कि जनता बिना खर्चे के भी उचित प्रतिनिधि को जिता सके। इसी के साथ जनता को विश्वास दिलाकर चुनाव जीतने के बाद विश्वास तोड़ने पर उन्हें वापिस बुलाने की कारगर रीति-नीति भी बनानी होगी।

➲ समाज में कुछ ऐसे निस्पृह लोकसेवी नेता जाग्रत् करने होंगे, जो चुनाव न लड़ें, किन्तु उनके मार्गदर्शन में जनता सही प्रतिनिधियों का चयन कर सके। जिन्हें समाज में साधन तो क्या, प्रतिष्ठा पाने की भी इच्छा न हो। समाज का विश्वास जीतने वाले ऐसे जनप्रतिनिधियों को राजनैतिक जनप्रतिनिधियों से कम महत्त्व नहीं दिया जाना चाहिए।

प्रजातंत्र की मालिक प्रजा को जाग्रत् करने के लिए हर संभव उपाय किए जाने हैं।

विशेष- इस पत्रक को अपने स्तर पर भी छपवा कर वितरित किया जा सकता है।

न सोचो अकेली किरण क्या करेगी, तिमिर में अकेली किरण ही बहुत है।

पर्यावरण प्रकोप का शमन करने गाँव-गाँव पहुँच रही है युगतीर्थ से प्रवाहित हुई 'वृक्षगंगा'

ऋषियों की स्मृति में हो रहा है वृक्षारोपण
नैमिषारण्य में लगाये जा रहे हैं ८८००० वृक्ष

सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

सीतापुर जिले के परिजनों ने नैमिष तीर्थ की आरण्यक वाली गौरव-गरिमा लौटाने के लिए उसके ८४ कोसीय परिक्रमा पथ पर बृहद् वृक्षारोपण करने का अभियान आरंभ कर दिया है। कहा जाता है कि इसकी ८४ कोसीय परिक्रमा परिधि में ८८००० ऋषियों का वास रहा है। प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु इसकी परिक्रमा करते हैं। उन सभी की स्मृति में ८८००० देव वृक्ष लगाने का संकल्प पर्यावरणविद् श्री राधेकृष्ण दुबे के नेतृत्व में लिया गया है।

एक गाँव की चौपाल पर कार्यक्रम प्रस्तुत करती प्रज्ञा टोली

१ जून को अभियान से पूर्व पूरे परिक्रमा क्षेत्र में २२ दिवसीय जन जागरण यात्रा निकाली गयी। वृक्षारोपण के लिए उत्साहित हजारों लोगों के ढ़पली के साथ गाते-बजाते 'देव वृक्ष लगायेंगे, नैमिष स्वर्ग बनायेंगे।', 'बरगद, पीपल, आम लगायें-ऋषि गौरव फिर वापस लायें' जैसे नारों से पूरे क्षेत्र को गुंजायमान कर दिया। देव वृक्ष अभियान के बड़े उत्साहवर्धक परिणाम आये।

यात्रा की विशिष्ट उपलब्धियाँ

- सीतापुर और हरदोई जिले के १०८ गाँवों में गोष्ठी हुई। इनमें १५११ लोगों ने वृक्ष लगाने के स्वैच्छिक संकल्प लिये।
- प्रशासन इस अभियान से गद्‌गद है और पूरा सहयोग कर रहा है।
- अनेक समाजसेवी संगठनों, तीर्थ पुरोहितों, आध्यात्मिक संगठनों ने इसमें भागीदारी कर युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव को उनकी जन्म शताब्दी पर श्रद्धांजलि अर्पित करने का मानस व्यक्त किया है।
- गुरुपूर्णिमा से श्रावणी तक यह अभियान चलाने का संकल्प लिया गया।

सेज क्षेत्र में वृक्षारोपण, महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी ने किया सहयोग

जयपुर (राजस्थान)

गायत्री परिवार सेज, जयपुर ने महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी के सहयोग से गुरुपूर्णिमा पर्व पर बृहद् वृक्षारोपण अभियान चलाया। यह अभियान १३ से १६ जुलाई तक चला, जिसमें २४०० वृक्षों का रोपण किया गया था। अभियान के लिए महिन्द्रा समूह ने ७५ हजार रुपये के पौधे गायत्री परिवार को नि:शुल्क उपलब्ध कराये थे। इसमें स्कूली विद्यार्थियों और स्थानीय लोगों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

विद्यालयों में वृक्षारोपण

वृक्षारोपण के लिए उत्साहित सेज क्षेत्र की तरुणाई

सेज में चले बृहद् वृक्षारोपण अभियान के अंतर्गत इण्डो इण्टर नेशनल स्कूल, सर्वोदय विद्या मंदिर, सुंदर शिक्षा शास्त्री महाविद्यालय, जग कल्याण महाविद्यालय, प्राचीन शिव मंदिर, संस्कृत महाविद्यालय जयपुर सहित १५ विद्यालयों, ३ मंदिरों व कई गाँवों में सैकड़ों की संख्या में वृक्ष लगाये गये। वृक्षारोपण में महिन्द्रा समूह के अधिकारियों-सी.ओ.ओ. श्री बी.के. सुब्बैया, हैड इंफ्रास्ट्रक्चर श्री संजय सिन्हा, डी.जी.एम. श्री जे.के. शर्मा, एच.आर. मैनेजर श्री अभिनव सिंह, जे.के. चौधरी सहित ममता त्रिपाठी, धर्मेश श्रीवास्तव एवं ड्यूस बैंक के अधिकारियों, पंच-सरपंचों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की रूपरेखा श्री संदीप त्रिपाठी ने बनायी थी।

गुरुपर्व पर उभरी सृजन चेतना, आरंभ हुई वृक्षारोपण की विशाल योजना, युवा शक्ति में जागा अदम्य उत्साह

मुख्यमंत्री ने किया शुभारंभ

राँची (झारखण्ड)

गायत्री परिवार राँची ने अपने नगर में १०००० वृक्ष लगाने का संकल्प लिया है। १७ जुलाई को अभियान का शुभारंभ पावन गुरुपूर्णिमा पर्व पर पहाड़ी मंदिर पर वृक्षारोपण से हुआ। मुख्यमंत्री श्री अर्जुन मुंडा ने आँवला और विधानसभा अध्यक्ष श्री सीपी सिंह ने आम व अनेक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों ने तरह-तरह के वृक्ष लगाते हुए गायत्री परिवार के संकल्पित अभियान का शुभारंभ किया। उसके बाद गायत्री परिवार की ओर से सर्वश्री पाण्डेय श्रीकृष्ण सहाय, अखिलेश्वर प्रसाद सिंह, सचिन ठाकुर, रणवीर चौधरी आदि बड़ी संख्या में कार्यकर्त्ताओं ने वृक्ष लगाये। पहाड़ी विकास समिति के सदस्यों की भी इस कार्य में सराहनीय भूमिका रही। उल्लेखनीय है कि १० हजार के संकल्पित अभियान के प्रथम चरण में पहाड़ी मंदिर पर ११०० वृक्ष लगाये जा रहे हैं।

तालाब निर्माण एवं वृक्षारोपण

महू-पीथमपुर, इंदौर (मध्य प्रदेश)

पीथमपुर और महू शाखा ने वृक्षगंगा अभियान का शुभारंभ प्राचीन बोकनेश्वर महादेव मंदिर में ५१ वृक्षों के रोपण के साथ किया। उल्लेखनीय है कि इस मंदिर के पास स्थानीय युवाओं ने एक तालाब का भी निर्माण किया है, जिसका पूजन और लोकार्पण इस अवसर पर किया गया। इन शाखाओं द्वारा आसपास के गाँवों में २००० वृक्षों के रोपण का संकल्प लिया गया है, जिनमें से ८०० पौधे लगाये जा चुके हैं। कर्नल द्रविण और सर्वश्री श्रीराम पटेल, ओमप्रकाश वैष्णव, कल्याण सिंह चौहान, धनराज मालवीय, रमेश बिरला, जीवन पटेल आदि नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि ले रहे हैं।

वृक्षारोपण अभियान में जुटे महू-पीथमपुर के उत्साही युवक

पंधाना, खण्डवा (मध्य प्रदेश)

गुरुपूर्णिमा के पावन पर्व पर पंधाना तहसील में वृक्षगंगा अभियान का शानदार शुभारंभ हुआ। इस उपलक्ष्य में पंधाना से ग्राम आरूद तक वृक्षगंगा एवं व्यसन मुक्ति-कुरीतिउन्मूलन जनजागरण रैली निकाली गयी। २५ किलोमीटर की इस यात्रा के समय कार्यकर्त्ताओं ने मार्ग के दोनों ओर सैकड़ों वृक्षों का रोपण भी किया। लोगों को तरुपुत्र, तरुमित्र के रूप में इन पौधों का संरक्षण करने के संकल्प दिलाये गये। श्री कालुराम सरपंच, वरिष्ठ-वयोवृद्ध श्री नामदेव काका, उमाशंकर पटेल, सदाशिव डोगरे, दिलीप बाबा, सुनील डोगरे आदि ने इस अभियान में प्रमुख रूप से भाग लिया।

मुलताई, बैतूल (मध्य प्रदेश)

गायत्री परिवार शाखा मुलताई ने गुरुपर्व पर जन-जन में श्रद्धा और समर्पण के भाव जगाते हुए अपार उल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर जन्म शताब्दी वर्ष में शांतिकुंज द्वारा घोषित वृक्षगंगा अभियान में शानदार भागीदारी करते हुए ब्लॉक के अनेक स्थानों पर श्रीराम स्मृति उपवन लगाने और पूरे ब्लॉक में १००० वृक्ष लगाने के सामूहिक संकल्प लिये गये। श्रीमती निर्मला चौधरी ने पर्व संदेश देते हुए समर्थ गुरु रामदास और शिवाजी जैसे गुरु-शिष्य परंपरा के कई आदर्शों की याद दिलाई। उन्होंने लोगों से परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी पर अपने शिष्यत्व की कसौटी पर खरे उतरने का आह्वान करते हुए शताब्दी महाकुंभ के लिए अधिकाधिक समयदान करने का आग्रह किया। ब्लॉक के १०८ परिजनों ने इस निमित्त दो माह का समयदान करने का संकल्प लिया।

गुरुपर्व के उपलक्ष्य में शक्तिपीठ पर १२ घण्टे का अखण्ड जप और उसके समापन पर पाँच कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न हुआ। गायत्री परिवार द्वारा संचालित विद्यालय गुरुकुल बाल संस्कार शाला के समस्त नवप्रवेशी बालकों का विद्यारंभ संस्कार कराया गया।

१६ जुलाई को आदर्श ग्राम विकास के लिए गोद लिये गाँव करज जाकर गाँववासियों को श्रीराम स्मृति उपवन की स्थापना का संकल्प कराया। तत्पश्चात उपवन के निर्धारित स्थल पर अशोक के पौधे लगाये गये। ब्लॉक के गाँव घाट बिरोली, मंगोना कला, तिवरखेड़, बिसनूर, मासोद, हिवरखेड़, सिरसावाड़ी, सांडिया, खेड़ीकार्ट, पानी, सोनोरा आदि में भी वृक्षारोपण किया गया। वृक्षगंगा अभियान को गति देने में डॉ. यू.जी. देशमुख, सर्वश्री टी.के. चौधरी, डॉ. के. बी. मानकर, रामदास देशमुख, यादव राव निम्बालकर, दिनेश साहू एवं महिला मण्डल की बहिनों ने प्रमुख योगदान दिया।

हरिद्वार की औद्योगिक वसाहत में निकली रैली और वृक्षारोपण करते परिजन

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

हरिद्वार की बीएचईएल शाखा ने गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर शिवालिक नगर सनातन शिव मंदिर से एक विशाल प्रभात फेरी निकालकर वृक्षारोपण एवं पर्यावरण जागरूकता का संदेश दिया। शांतिकुंज से आये जन्म शताब्दी रथ और श्री दिनेश पटेल, श्री सूरत सिंह अमरुते की टोली के साथ इस प्रभात फेरी में शिवालिक नगर, बीएचईएल, ज्वालापुर शाखाओं के सैकड़ों लोग शामिल हुए। केशरिया परिधान में नारे लगाते, जोशीले उद्‌घोष करते सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने लोगों को पर्यावरण रक्षा के लिए, विशेषकर जन्म दिन जैसे विशेष अवसरों पर तरुमित्र या तरुपुत्र के रूप में वृक्षारोपण करने की प्रेरणा दी। श्री अचलेश अग्रवाल और श्री देवशंकर शर्मा लोगों को 'पाना है तो देना सीखो' पुस्तक मुफ्त बाँट रहे थे।

२४ जुलाई को श्री अचलेश अग्रवाल और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती आशा अग्रवाल के विशेष सहयोग से हरिलोक कॉलोनी, ज्वालापुर में वृक्षारोपण का विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर वहाँ चल रही बाल संस्कार शाला के बच्चों और उनके अभिभावकों ने आँवला की पौधों का रोपण किया। सर्वश्री एस.के. गुप्ता, के.एन. यादव, आनंद प्रकाश, पवन चौधरी, अनिल कुमार आदि ने वृक्षारोपण में मुख्य रूप से भाग लिया।

श्री देव शंकर शर्मा के अनुसार हरिद्वार जनपद ने वृक्षगंगा अभियान के अंतर्गत १००० वृक्ष लगाने का संकल्प लिया है। इसके अंतर्गत शिवालिक नगर, सिडकुल एवं सीआईएसएफ चौराहे पर गायत्री परिवार द्वारा १०८ वृक्षों का रोपण किया गया था।

यदि उपकार का प्रतिदान देने की समार्थ्य न हो, तो वह नैतिक रूप से कमजोर बनाता है।

देश को स्वस्थ, स्वच्छ, स्वावलम्बी बनाने के लिए धड़क रहा है युवाशक्ति का दिल

सेवाभावी युवाशक्ति द्वारा बार-बार आयोजित हो रहे हैं रक्तदान शिविर

कटक (उड़ीसा)

जरूरतमंदों की सेवा के लिए सदैव तत्पर कटक के गायत्री परिवार युवा मण्डल के सदस्यों ने जुलाई के द्वितीय सप्ताह में दो रक्तदान शिविर आयोजित किये। चंडीकोल के वर्चना गाँव के

कटक में चल रहा रक्तदान शिविर

सरकारी अस्पताल में लगाये गये शिविर में ६३ यूनिट रक्तदान हुआ, वहीं बड़चना ब्लॉक के भड़ंगा गाँव में आयोजित दूसरे शिविर में ६२ लोगों ने रक्तदान किया। दोनों ही शिविर अरक्षित साँवल के नेतृत्व में रेडक्रॉस के सहयोग से आयोजित हुए और कटक मेडिकल के रेडक्रॉस रक्त बैंक को प्रदान किया गया।

उल्लेखनीय है कि रेडक्रॉस बैंक के अधिकारी श्री सत्याभाई को गायत्री परिवार की सेवा भावना पर अटूट आस्था है। जब भी उन्हें रक्त की नितांत आवश्यकता होती है, वे गायत्री परिवार के युवा मण्डल से संपर्क करते हैं। इस कड़ी में अब तक युवा शाखा द्वारा १७ बार रक्तदान शिविर आयोजित किया जा चुका है, जिसका हजारों गरीब और बेसहारा लोगों को लाभ मिला। शिविर आयोजन में प्रभात नायक, विक्रम साहू, स्वामी नायक, रामचंद्र मोहन्ती, मानस नायक ने बड़े उत्साह के साथ अग्रणी सेवाएँ प्रदान कीं।

मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)

विश्व रक्तदान पखवाड़े के समय मिर्जापुर के जिला ब्लड बैंक द्वारा जिला अस्पताल परिसर में बृहद् रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। स्थानीय गायत्री परिवार के कल्याणी गौड़, वंदना गुप्ता, शशि गुप्ता, सुषमा सोनी, कनक वर्मा, राजू गुप्ता, शिखर गौड़, सालिकराम मार्य आदि ने इसकी सफलता में अग्रणी योगदान देते हुए स्वयं रक्तदान किया और अनेकानेक लोगों को प्रेरित किया। उल्लेखनीय है कि गायत्री शक्तिपीठ से सम्बद्ध यह परिजन स्वास्थ्य आन्दोलन को पूरे मनोयोग से गति दे रहे हैं। उनके द्वारा अब तक लगाये गये नि:शुल्क शिविरों में गरीब वर्ग के ५५७ मरीजों के मोतियाबिंद का नि:शुल्क ऑपरेशन कराया गया है और होम्योपैथिक चिकित्सा द्वारा १५००० से अधिक मरीजों का उपचार किया गया है।

छत्तीसगढ़ के हर जिले में नशामुक्ति रैलियाँ और कार्यशालाएँ

बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

छत्तीसगढ़ के प्रांतीय संगठन ने पूरे प्रांत में नशाबंदी के लिए दबाव बनाने हेतु रैलियाँ निकालीं। इस तरह की रैलियाँ १८ जिलों में निकाली गयीं, जिनमें नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं के अलावा युवाशक्ति ने प्रशंसनीय भागीदारी की। जन जागरण रैलियों का समापन जिला कलैक्टरेटों पर हुआ, जहाँ शराब बंदी की माँग करने वाले मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन जिला कलेक्टरों को सौंपे गये।

गायत्री परिवार ने अपने ज्ञापन में सर्वोच्च न्यायालय के आदेश का हवाला देते हुए शराब बंदी के लिए कड़ी कार्यवाही करने का आग्रह मुख्य मंत्री महोदय से किया था। इसमें सार्वजनिक स्थलों से १०० मीटर की दूरी के अंदर की शराब की दुकानों को हटाने, अवैद्य दुकानों को बंद कराने, एक निश्चित सीमा में राज्य में पूर्ण शराब बंदी करने और स्कूली पाठ्यक्रम में नशे की प्रवृत्ति को रोकने वाली पाठ्य सामग्री का समावेश करने जैसे सुझाव इस ज्ञापन में दिये गये थे।

हर जिले में व्यसनमुक्ति कार्यशाला

छत्तीसगढ़ के प्रांतीय संगठन ने व्यसनमुक्ति आन्दोलन को सशक्त बनाने के लिए हर जिले में जगह-जगह व्यसनमुक्ति कार्यशालाओं का आयोजन कर परिजनों को प्रशिक्षित करने का क्रम आरंभ कर दिया है। रायपुर जिले के नवापारा, गरियाबंद, कांकेर, बस्तर जिले के कोंडागाँव, दन्तेवाड़ा, बीजापुर, नारायणपुर, अम्बिकापुर, रायगढ़, बिलासपुर, जशपुर जिले के कुनकुरी, जाँजगीर चाँपा आदि स्थानों पर समाचार भेजे जाने तक ऐसी कार्यशालाएँ सम्पन्न हो चुकी थीं। इन शिविरों में प्रदर्शनी लगाने, नाटकों का मंचन करने, रैलियों की व्यवस्था बनाने, जनसंपर्क को प्रभावी बनाने जैसे सूत्र प्रशिक्षणार्थियों को सिखाये जा रहे हैं।

अपनी राह स्वयं बनाकर प्रस्तुत किया आदर्श

बिलासपुर (छत्तीसगढ़) : युवा प्रज्ञा मण्डल जोरापारा ने अपने समन्वित प्रयासों से गाँव के तालाब की सफाई कर एक आदर्श प्रस्तुत किया है। उल्लेखनीय है कि प्रज्ञा मण्डल ने नगर पालिका को तालाब की दुर्दशा का चित्रण करते हुए वर्षों से पूर्व उसकी सफाई के लिए कई बार ज्ञापन दिया था, लेकिन प्रशासन की ओर से इस पर कोई ध्यान नहीं दिये जाने पर स्वयं प्रज्ञा मण्डल के सदस्यों ने ही यह कार्य करने का बीड़ा उठाया।

२६ जून को डॉ. हेमंत कौशिक के नेतृत्व में सफाई अभियान चलाया गया। सर्वश्री एस.पी. चौहान, बी.आर. धुर्वे, बलीराम साहू, रामकुमार साहू, हेमलाल साहू, योगेश साहू, कु. रमा कोरी, छेदीलाल चंद्रा, वर्मा जी आदि प्रमुख रूप से सक्रिय रहे। स्थानीय ग्रामवासी जितेन्द्र सिंह ठाकुर, नारायण यादव, रामाराव शिंदे आदि ने उनका पूरे मनोयोग से सहयोग किया। सभी ने मिलकर ५ ट्रेक्टर कचरा, प्लास्टिक की पन्नी, पुराने कपड़े आदि इस तालाब से निकाले।

स्थानीय युवाओं ने भविष्य में इस तालाब को स्वच्छ बनाये रखने का संकल्प लिया है। वे प्रत्येक रविवार को प्रात: इसके लिए सामूहिक श्रमदान करेंगे। गायत्री परिवार ने प्रज्ञामण्डल जोरापारा ने स्वच्छता के प्रति गाँववासियों का ध्यानाकर्षित करते हुए तालाब के चारों ओर २० बड़े बोर्ड लगा दिये हैं, जिनपर पूजन सामग्री को अलग रखने, प्लास्टिक की पन्नी और अन्य सामग्री तालाब में विसर्जित न करने, फूल पत्ती न तोड़ने जैसी हिदायतें ग्रामवासियों को दी गयी हैं।

ज्ञापन : ताप्ती को रखें प्रदूषण मुक्त

मुलताई, बैतूल (मध्य प्रदेश)

ताप्ती शुद्धिकरण अभियान में तन, मन, धन से जुटे गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने ताप्ती जयंती पर एसडीएम श्री भरत यादव और मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्री वी.के. दीवान को ज्ञापन सौंपते हुए ताप्ती को प्रदूषण मुक्त करने और रखने के उपायों की याद दिलाई। ज्ञापन में साबुन-सोडा का प्रयोग न करने, पॉलीथीन विसर्जन को रोकने, जहरीले रंगों से रंगी मूर्तियों का विसर्जन न करने, दूषित जल का प्रवाह ताप्ती में न जाने देने, तट और घाटों पर गंदगी को रोकने के लिए उचित उपाय करने जैसे व्यावहारिक सूत्र प्रशासन को दिये गये हैं। ज्ञापन सौंपने गये कार्यकर्त्ता श्री टी.के. चौधरी, दिनेश साहू, रामदास देशमुख, श्री बारंगे आदि ने गायत्री परिवार की ओर से प्रशासन को पूरा सहयोग देने का आश्वासन भी दिया।

भ्रष्टाचार के विरोध में उठी आवाज

प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश) : स्थानीय गायत्री परिवार और व्यापार परिषद् के पदाधिकारियों ने ४ जून को चंद्रशेखर आजाद की प्रतिमा के समक्ष मोमबत्तियाँ जलाकर देश से भ्रष्टाचार की कालिमा मिटाने और राष्ट्र निर्माताओं को सद्बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना की। व्यापार मण्डल के अध्यक्ष श्री माधोश्याम तिवारी और गायत्री परिवार के श्री चंद्रनारायण शर्मा ने इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि गायत्री परिवार के संस्थापक पूज्य गुरुदेव का उपदेश 'हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा' समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर करने का सबसे प्रभावशाली तरीका है। इस अवसर पर प्रशासन को महामहिम राष्ट्रपति के नाम एक ज्ञापन भी सौंपा गया।

आदर्श विवाह कर किया धन और धर्म का सम्मान

रायगढ़ (छत्तीसगढ़) - दरोगापारा रायगढ़ निवासी श्री भोलाराम ठेठवार ने अपने पुत्र चि् प्रज्ञेश कुमार का विवाह मिशन के आदर्शों के अनुरूप पूरी सादगी से कराते हुए विवाह खर्च से बची ५१००० रु. की धनराशि परम पूज्य गुरुदेव के जन्म शताब्दी वर्ष में भागीदारी स्वरूप अर्पित किये। वे अपने समधी श्री नानूलाल कोका तथा पुत्र प्रज्ञेश एवं पुत्रवधु प्रज्ञा के साथ युगतीर्थ-शांतिकुंज का आशीर्वाद लेने आये थे। दोनों ही परिवार मिशन को पूरी तरह समर्पित हैं और अपने जीवन से अपने समाज का पथ प्रदर्शन करने का प्रयास कर रहे हैं।

ज्ञानयज्ञ की ज्योति जलाने घर-घर पहुँच रहे हैं ज्ञानरथ

कवर्धा (छत्तीसगढ़)

कवर्धा शाखा जन्म शताब्दी वर्ष के विशेष उल्लास के साथ ज्ञानरथों के माध्यम से युग चेतना विस्तार का अभियान बड़ी सफलता के साथ शानदार ढंग से पूरा कर रही है। गुरुपूर्णिमा से वहाँ इस योजना में चार ज्ञानरथ सक्रिय हो गये हैं।

यह ज्ञानरथ गाँव-गाँव जाकर दीपयज्ञ, वृक्षारोपण, स्वच्छता-श्रमदान, दीवार लेखन आदि कार्य कर रहे हैं। सायं ४ बजे किसी गाँव में ज्ञानरथ सात सदस्यीय टोली के साथ पहुँचता है। दो घण्टे घर-घर जनसंपर्क और दीपयज्ञ का आमंत्रण दिया जाता है। अगले दो घण्टे में दीपयज्ञ के साथ युग संदेश दिया जाता है। दूसरे दिन कुछ लोग घर-घर जाकर युग साहित्य सेट स्थापित कराते हैं और कुछ लोग गाँववालों के साथ मिलकर ग्राम सफाई, दीवार लेखन आदि कार्य करते हैं। गाँव वालों को गाँव के समग्र विकास के लिए युग निर्माण आन्दोलन से जुड़ने और इन कार्यों को आगे भी जारी रखने का निवेदन गाँव वालों से किया जाता है।

समाचार प्रेषक श्री रविशंकर गुप्ता के अनुसार लगभग पिछले एक माह में ६८ गाँवों का मंथन इन ज्ञानरथों के साथ किया गया है। इस क्रम में १३ लाख रुपये का साहित्य गाँवों में स्थापित किया गया।

इन ज्ञानरथों को अपने परिजनों ने ही फायनांस कर खरीदा है। श्री कृष्ण कुमार विनोद के मार्गदर्शन में गायत्री शक्तिपीठ भिलाई के परिजनों ने उसे रथ का आकार दिया है।

किसी की वाहवाही पाना उसकी मित्रता की पहचान नहीं है। सच्चा मित्र वह है, जो मुसीबत में सहारा दे।

जन्म शताब्दी वर्ष के विशेष गुरुपूर्णिमा पर्व पर छायी भीतर-बाहर की हरियाली

फोण्डा (गोवा)

स्थानीय शाखा ने १७ जुलाई को गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य में ९ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ विशेष समारोह रखा था, जिसमें ७०० लोगों ने भाग लेते हुए युगऋषि के युग निर्माण आन्दोलन को सफल बनाने के लिए उनकी ज्ञान चेतना को घर-घर पहुँचाने के संकल्प लिये। इस अवसर पर रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया था, जिसमें ५० लोगों ने रक्तदान किया।

इस समारोह में उन ७२ विशिष्ट कार्यकर्त्ता-शिष्यों ने भी बड़ी श्रद्धा के साथ भाग लिया, जो पिछले दिनों रेल का एक डिब्बा ही आरक्षित कर शांतिकुंज में ९ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र करने आये थे। इन नैष्ठिक परिजनों ने जन्म शताब्दी महोत्सव में भी इसी प्रकार आकर अपनी भावभरी सेवाएँ प्रदान करने का संकल्प लिया है। पर्व समारोह का संचालन करने शांतिकुज प्रतिनिधि श्री योगीराज बल्कि की टोली पहुँची थी। इसकी सफलता में स्थानीय परिजन सर्वश्री ए.आर. जरियार, सिद्धेश्वर नाथ मिश्रा, अशोक वैष्णव, बी.पी. पुरोहित, वास्को एवं वालपई शाखा के परिजनों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पुणे (महाराष्ट्र)

राजगुरु नगर, पुणे शाखा ने ९ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ गुरुपूर्णिमा पर्व मनाया। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले १००० लोगों में से जहाँ लगभग १५० लोगों ने गुरुदीक्षा व अन्य संस्कार कराये, वहीं शांतिकुंज द्वारा जन्म शताब्दी के विशेष उपलक्ष्य में घोषित वृक्षगंगा अभियान के अंतर्गत ५०० वृक्षों का रोपण किया गया। पर्व संदेश शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री योगीराज बल्कि ने दिया। यज्ञ संचालन श्री अंगद साहनी, श्री मोहन कोकाटे एवं श्री प्रकाश कोहिणकर ने किया।

जनी सांघवी, पुणे शाखा द्वारा आयोजित गुरुपूर्णिमा पर्व समारोह में १२ घंटे का अखण्ड जप रखा गया। इसकी पूर्णाहुति पर दीपयज्ञ हुआ। इस अवसर पर २५० पौधों का वितरण किया गया। कार्यक्रम संचालक शांतिकुंज प्रतिनिधि ने नैष्ठिक परिजनों को पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी का महत्त्व समझाते हुए समयदान-अंशदान का आह्वान किया। अधिकांश कार्यकर्त्ताओं ने १५ सितम्बर से शांतिकुंज आकर समयदान करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम आयोजन का सफल दायित्व महिला मण्डल की बहिनों ने सँभाला।

हाटपीपल्या, देवास (मध्य प्रदेश)

गायत्री तीर्थ हाटपीपल्या पर गुरुपूर्णिमा पर्व भरपूर श्रद्धा, सद्भावना और समर्पण भाव के साथ मनाया गया। जप, ध्यान, नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ, संस्कार आदि कार्यक्रमों के साथ कार्यकर्त्ताओं की एक विशेष गोष्ठी भी हुई, जिसमें वृक्षगंगा अभियान को गति देने की प्रतिबद्धता सभी ने दोहराई।

गायत्री तीर्थ हाटपीपल्या ने उन सभी गाँवों में, जहाँ अब तक गायत्री यज्ञ कराये गये हैं, स्मृति उपवन लगाने का संकल्प लिया है। गुरुपूर्णिमा से श्रावणी के बीच इस आन्दोलन को विशेष गति दी जा रही है, जबकि यह कार्य पिछले कई दिनों से आरंभ कर दिया गया है। धुराडा में १८ वर्षों से यज्ञ चल रहा है, वहाँ १५०० वृक्ष लगाने का संकल्प लिया गया। पोलाय में कृषक गेंदालाल यादव ने अपनी कृषिभूमि पर १५०० वृक्ष लगाये हैं। टिल्याखेड़ी में कृषक अजाबसिंह पटेल ने १५० वृक्ष लगाने का संकल्प लिया। महिलाओं ने अपने अड़ोस-पड़ोस के पाँच-पाँच घरों में तुलसी की पौध लगाने का संकल्प लिया। गायत्रीतीर्थ में पहले से ही सघन वृक्षारोपण किया गया है।

नेपानगर (मध्य प्रदेश)

गायत्री शक्तिपीठ में पावन गुरु पूर्णिमा का तीन दिवसीय पर्व सोल्लास मनाया गया। इस उपलक्ष्य में आयोजित ५ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में १०० लोगों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली, वहीं पुराने दीक्षित परिजनों ने प्रायश्चित्त दीक्षा ग्रहण की। सभी ने जन्म शताब्दी के कार्यक्रम में अपनी भागीदारी के संकल्प लिये।

समाचार प्रेषक श्री एस.एस. दुबे ने अनुसार अगले दिन वृक्षगंगा अभियान के अंतर्गत १०० पौधे रोपे गये तथा नेपानगर क्षेत्र में दो हजार पौधे रोपने का संकल्प लिया गया। गुरुपूर्णिमा से ही वृक्षारोपण अभियान आरंभ हो गया है, जो श्रावणी तक चलेगा।

फोण्डा, गोवा में कार्यक्रम प्रस्तुत करती टोली और तुलसी की पौध बाँटती बहिनें

कवर्धा (छत्तीसगढ़)

गायत्री शक्तिपीठ कवर्धा पर गुरुपूर्णिमा पर्व पावन गुरुसत्ता की जन्म शताब्दी के उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर जिले में राष्ट्र जागरण उपयात्राओं के रूप में गाँव-गाँव का मंथन कर रहे ४ ज्ञानरथों का सहसपुर, लोहारा में संगम हुआ। तत्पश्चात् रथों की विशाल शोभायात्रा निकाली गयी। इसके साथ चल रहे सैकड़ों लोगों के जयघोष से पूरा नगर गायत्रीमय हो गया। शांतिनगर, साहूपारा, चांदनी चौक एवं गायत्री मंदिर पर दीपयज्ञ के साथ जन्म शताब्दी का विशिष्ट उल्लासयुक्त संदेश दिया गया।

गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य में २४ घंटे का अखण्ड जप हुआ। यज्ञ, संस्कारादि के बाद सामूहिक वृक्षारोपण किया गया। तत्पश्चात् एक गोष्ठी हुई, जिसे संबोधित करते हुए श्री आरएस गुप्ता ने नैष्ठिक शिष्यों को आत्म-समीक्षा, आत्म-शोधन, आत्म-निर्माण और आत्म-विकास के लिए प्रेरित किया। गुरुपर्व पर प्रज्ञा पुत्रों एवं ब्रह्मवादिनी बहिनों ने घर-घर जाकर युग साहित्य की स्थापना की और पौधारोपण किया।

गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

गायत्री शक्तिपीठ राजघाट में गुरुपूर्णिमा पर्व शांतिकुंज द्वारा घोषित चार दिवसीय समारोह के अनुरूप भरपूर श्रद्धा-उल्लास के साथ मनाया गया। अखण्ड जप के प्रति श्रद्धालुओं की आस्था देखते ही बनती थी। साधना स्थल पूरी तरह भर जाने के कारण लोगों ने अलग-अलग स्थानों पर जप करते हुए इसमें भागीदारी की।

गोरखपुर शाखा ने वृक्षगंगा अभियान में शानदार भागीदारी करते हुए वन विभाग से पहले से ही २१००० पौधे सुरक्षित कर लिये हैं। समय की अनुकूलता को देखते हुए वहाँ एक सप्ताह पहले से ही वृक्षारोपण कार्य आरंभ हो गया था। १७ जुलाई को वृक्षारोपण का मुख्य समारोह आयोजित हुआ। समाचार दिये जाने तक शक्तिपीठ के माध्यम से विभिन्न स्थानों पर ११००० पौधे रोपित किये जा चुके थे। शक्तिपीठ की टोलियाँ पूरे श्रावण मास में जगह-जगह दीपयज्ञ करते हुए उनके साथ वृक्षारोपण करेंगी।

मेरठ (उत्तर प्रदेश)

गायत्री शक्तिपीठ कल्याण नगर पर गुरुपूर्णिमा महोत्सव ९ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ मनाया गया। जनपद के सैकड़ों परिजनों ने इस कार्यक्रम में भाग लेते हुए पावन गुरुसत्ता को संकल्प श्रद्धांजलि अर्पित की। मेरठ जिले ने वृक्षगंगा अभियान के अंतर्गत ५००० पौधे लगाने का संकल्प लिया है।

महानगर मुंबई में प्रवाहित हुई श्रद्धा, सद्भाव और सुविचारों की वैतरणी

मुंबई (महाराष्ट्र) - गायत्री परिवार मुंबई ने १७ जुलाई को गुरुपूर्णिमा पर्व मनाते हुए गड़करी रंगायतन ऑडिटोरियम में 'गुरुपूर्णिमा सत्संग' कार्यक्रम आयोजित किया था। कार्यक्रम में शांतिकुंज के जोनल प्रभारी श्री कालीचरण शर्मा मुख्य रूप से उपस्थित थे। श्री रजनीश प्रकाश-चेअरमेन एण्ड चीफ एक्ज़ीक्यूटिव हैवी वॉटर बोर्ड बी.ए.आर.सी. तथा डॉ. रविकांत सिंह की विशिष्ट गरिमामय उपस्थिति रही।

मंचासीन प्रमुख अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। अतिथियों के सम्मान के बाद आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का विशेष गुरुपूर्णिमा संदेश सुनाया गया। पूज्य गुरुदेव के जीवन का परिचय देने के लिए एक बड़े पर्दे पर वृत्तचित्र दिखाया गया।

श्री रजनीश प्रकाश जी ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव अपने जमाने के अग्रणी अध्यात्म विज्ञानी हैं, जिनके अनुयायी चिकित्सा, उद्योग, राजनीति, कृषि, कला आदि हर क्षेत्र में हैं।

डॉ. रविकांत जी ने बताया कि अखण्ड ज्योति पत्रिका को नियमित रूप से पढ़ने से उन्हें अपने चरित्र और मानवीय मूल्यों के विकास में कैसे मार्गदर्शन और सहायता मिलती रही। उन्होंने वर्ष २००८-९ में गायत्री परिवार के चिकित्सक समूह की ओर से स्वयंसेवी चिकित्सकों को मिली सहायता की प्रशंसा करते हुए उनके साथ आपदा प्रबंधन कार्यों में सहयोग करने की इच्छा व्यक्त की।

श्री कालीचरण शर्मा जी ने गुरुपर्व का संदेश देते हुए परम पूज्य गुरुदेव से अपने प्रथम मिलन और उनसे मिले मार्गदर्शन, प्रेम की भावविभोर करने वाली स्मृतियाँ बतायीं। उन्होंने कहा कि केवल वही व्यक्ति भगवान को पा सकता है जो समर्थ गुरु से जुड़ा हो।

वृक्षगंगा अभियान की चर्चा करते हुए शांतिकुंज प्रतिनिधि ने प्रत्येक मुंबईकर से एक वृक्ष लगाने और उसे तरुपुत्र के रूप में विकसित करने का संकल्प लेने तथा अन्य पाँच लोगों को इसके लिए प्रेरित करने का आह्वान किया। उन्होंने नर्मदा और गंगा स्वच्छता अभियान की जानकारी देने के साथ नगर के तमाम युवा संगठनों से गायत्री परिवार के युवा संगठन 'दिया' से जुड़ने और देश की सभी नदियों को स्वच्छ बनाने का आह्वान भी किया। उन्होंने पूज्य गुरुदेव के जन्म शताब्दी वर्ष के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत आयोजन की आवश्यकता और उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला।

शांतिकुंज प्रतिनिधि का सम्मान करते स्थानीय परिजन

शांतिकुंज प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुत विशेष ध्यान और प्रज्ञागीतों ने जन-जन के मन को आस्था के उत्तुंग शिखर पर प्रतिष्ठित किया। गुरुपूर्णिमा के अवसर पर दीक्षा एवं प्रायश्चित्त दीक्षा संस्कार का क्रम भी सम्पन्न हुआ। सैकड़ों लोगों को तुलसी की पौध वितरित की गयीं। मुंबई के दूर-दूर तक के उपनगरों से आये परिजन इस सभा में शामिल थे।

बोरिवली उपजोन का दो दिवसीय समारोह

बोरिवली, मुंबई (महाराष्ट्र)

बोरिवली उपजोन द्वारा गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर गीता ज्ञानयोग केन्द्र, मालाड में दो दिवसीय समारोह आयोजित हुआ। १५ एवं १६ जुलाई की तारीखों में रखे गये इस समारोह में ३०० श्रद्धालुओं ने भाग लेकर युगशक्ति गायत्री और इस युग में गायत्री के उद्धारक ऋषियुग्म को अपनी भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की। ये सभी श्रद्धालु गायत्री परिवार के आह्वान पर प्रात: ६ बजे गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य में अपने घर पर शुद्ध घी के पाँच-पाँच दीपक जलाकर नवयुग की आरती उतारकर आये थे।

१५ जुलाई को देवपूजन, गुरुगीता पारायण, दीक्षा एवं अन्य संस्कार संपन्न हुए, जिसका संचालन महिला मण्डल बोरिवली ने किया। मध्याह्नकाल में गायत्री चालीसा पाठ, वक्तृत्व एवं निबंध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी थीं। इनके विजेताओं को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। विनियोग परिवार के मुख्य ट्रस्टी श्री राजकुमार जोशी, गीता ज्ञानयोग के श्री हीरालाल सर्राफ, डॉ. राजेश चौबे और डॉ. भार्गव बारमैया विशिष्ट अतिथि थे। सायंकाल नारी जागृति पर एक फिल्म 'पापा तुम कहाँ हो?' दिखाई गयी।

१६ जुलाई को यज्ञ-संस्कार के बाद सत्यनारायण व्रत कथा का आयोजन हुआ। श्री वंशीलाल दवे ने सत्यनारायण कथा की पूज्य गुरुदेव द्वारा बतायी व्याख्या करते हुए लोगों को ईश्वर से याचना नहीं, जीवन साधना करने की प्रेरणा दी। सर्वश्री राजेशभाई जरीवाला, कांतिभाई पंचाल, शीला द्विवेदी, उषा पटेल, अर्जुन शुक्ला ने व्यवस्थाओं में सराहनीय योगदान दिया।

कोई वह करता है, जो उसे नहीं करना चाहिए तो निश्चय ही वह भोगेगा जो उसे नहीं भोगना चाहिए।

राष्ट्र जागरण तीर्थयात्राओं के संग गाँव-गाँव पहुँच रहे हैं गुरुदेव-माताजी

स्वागत में बिछाये पलक पाँवड़े

आगरा (उत्तर प्रदेश)

मध्य प्रदेश के प्रांतीय संगठन द्वारा 'जहाँ-जहाँ चरण पड़े गुरुवर के' शीर्षक से निकाली गयी राष्ट्र जागरण तीर्थयात्रा का दिनांक १६ एवं १७ जून को आगरा जिले में जगह-जगह भव्य स्वागत हुआ। जनपद के सीमांत गाँव सैंया में जिला समन्वयक श्री उमेश कुलश्रेष्ठ एवं उनके साथियों ने शताब्दी रथ का बैण्ड बाजों के साथ भव्य स्वागत किया। आगे ग्राम रोहता में स्वागत समारोह और ग्राम सेवला में आरती, स्वागत, भोजन-विश्राम के बाद यात्रा का काफिला आगरा नगर पहुँचा। आगरा शहर में जन्म शताब्दी और राष्ट्र जागरण तीर्थयात्रा के संदर्भ में श्री हरिओम दीक्षित एवं श्री अशोक दीक्षित (सी.ए.) द्वारा पूरे शहर में २५-३० होर्डिंग लगाये गये थे।

आगरा में पहुँची राष्ट्र जागरण तीर्थयात्रा और सूरसदन प्रेक्षागृह में सम्मानित हुए बुजुर्ग

आगरा शहर के सूर सदन प्रेक्षागृह में मुख्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधि श्री कालीचरण शर्मा ने इसे संबोधित करते हुए परम पूज्य गुरुदेव के क्रांतिकारी व्यक्तित्व और ऐतिहासिक अभियान का परिचय दिया, जिसे सुन कर सभी श्रोता मानो स्तब्ध हो गये थे। उन्होंने कहा कि निकट भविष्य में उज्ज्वल भविष्य का नारा साकार होने जा रहा है। आने वाला समय सकारात्मक ऊर्जा से लबालब होगा।

आगरा में सभी धर्म-सम्प्रदाय के लोगों ने जन्म शताब्दी शक्ति कलश और ऋषियुग्म की चरण पादुकाओं का हार्दिक स्वागत किया। सूरसदन प्रेक्षागृह में आरंभ में महापौर अंजुला सिंह माहौर ने प्रथम पूजन किया। सांसद मा.रामशंकर कठेरिया एवं विधायक श्री जगन प्रसाद गर्ग, श्रीमती सरोज गौरिहार ने 'विचार क्रांति की लाल मशाल' प्रज्वलित की। देसंविवि की परिवीक्षाधीन टोली ने अनेक सामाजिक समस्याओं पर मार्मिक नुक्कड़ नाटकों का मंचन कर दर्शकों का मन मोह लिया। समारोह में मिशन को महती सेवाएँ प्रदान करने वाले ६० वरिष्ठ नागरिकों को सम्मानित किया गया।

अगले दिन शक्तिपीठ शाहदरा से प्रातः जन्मशताब्दी रथ को सभी कार्यकर्त्ताओं ने भावभरी विदाई दी। उस दिन भी जहाँ-जहाँ से रथ गुजरा, अनेक स्थानों पर रथ का भव्य स्वागत किया गया। ट्रांस यमुना, नुनिहाई, शाहदरा मार्ग, एत्मादपुर, टूण्डला में ऐसे स्वागत समारोह आयोजित हुए।

बुलंदशहर (उत्तर प्रदेश)

जन्म शताब्दी राष्ट्र जागरण तीर्थयात्रा दिनांक १० जुलाई को बुलंदशहर पहुँची। मुख्य स्वागत समारोह राजेबाबू रोड़ स्थित ऐशली कन्वेंशन हॉल में हुआ। शांतिकुंज टोली के नायक श्री सुखदेव शास्त्री ने सभी नगरवासियों को जन्म शताब्दी महाकुंभ की विस्तृत जानकारी देते हुए उसमें भागीदारी का आमंत्रण दिया।

बुलंदशहर के स्वागत समारोह में सम्मानित हुए बुजुर्ग युग सेनानी

इससे पूर्व जनपद की सीमा-गुलावठी में शक्ति कलश का भव्य स्वागत हुआ। बुलंदशहर के प्रवेश द्वार भूड चौराहे पर अपने वाहनों के विशाल काफिले के साथ पहुँचे सैकड़ों नगरवासियों ने गुरु चरण पादुकाओं को अपनी प्रथम श्रद्धांजलि अर्पित की। सभी ने मिलकर नगर भ्रमण किया, जगह-जगह स्वागत-आरती का क्रम रहा। शहीद चौक कालाआम पहुँचने पर शांतिकुंज टोली के नायक श्री सुखदेव शास्त्री ने शहीद भगत सिंह की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

मुख्य समारोह में मिशन की वयोवृद्ध विभूतियों का भावभरा सम्मान किया गया। सर्वश्री रामकृष्ण अग्रवाल, रामजीलाल मिश्रा, गोविंद प्रसाद उपाध्याय, राजवीर शर्मा-प्रधानाचार्य, श्रीमती मित्तल और सुश्री हिरदेश सक्सेना का सम्मान किया गया। सम्मान समारोह का वातावरण भाव विह्वल करने वाला था।

उपजोन सह संयोजक श्री अनिल शर्मा ने जब इन पुरोधाओं का जीवन वृत्तांत सुनाया तो हर कोई गुरुभक्ति से ओतप्रोत हो गया। सभी को शांतिकुंज प्रतिनिधियों ने गायत्री महामंत्र की चादर उढ़ाई, पुष्पहार पहनाये। इस अवसर पर उपजोन समन्वयक श्री कुलदीप मित्तल सहित अधिकांश प्रमुख कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

अविरल बही अश्रुधारा

प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश)

प्रतापगढ़ पहुँचे राष्ट्र जागरण तीर्थयात्रा रथ ने वहाँ के नैष्ठिक परिजनों को ऐसी अनुभूति करायी, मानो स्वयं परम पूज्य गुरुदेव-माताजी स्वयं इस रथ में पधारे हों। विदाई के समय चरण पादुकाओं की आरती करते समय श्री चंद्रनारायण शर्मा की आँखों से अविरल अश्रुधारा फूट पड़ी। जैसे शांतिकुंज में पूज्य गुरुदेव-माताजी अपने बालकों को विदाई देते थे, वैसी ही दिव्यता का संचार कार्यकर्त्ताओं ने इस अवसर पर किया। अनेक कार्यकर्त्ता भावविभोर होकर जिले की सीमा तक रथ के साथ-साथ चलते रहे।

आरंभ में कार्यकर्त्ताओं ने बड़े जोश और उत्साह के साथ जन्म शताब्दी तीर्थयात्रा का स्वागत किया। अपने-अपने वाहनों पर रथ के साथ चलते हुए नगर परिक्रमा की। गोपाल मंदिर-गायत्री शक्तिपीठ पर विशेष स्वागत समारोह आयोजित हुए। सायंकाल दीपयज्ञ के अवसर पर पूरा परिसर श्रद्धालुओं की आस्था के कारण दिव्यता से भर उठा।

पंजाब में हुआ भव्य स्वागत

जन्म शताब्दी राष्ट्र जागरण तीर्थ यात्रा का पंजाब के प्रायः सभी जिलों में जोरशोर से स्वागत हुआ। भुम्बली-गुरदासपुर में ग्रामीणों का उत्साह देखने लायक था। जालंधर में १५ कि.मी. पहले से ही मोटर साइकिलों पर सवार युवा दल ने रथयात्रा की शोभा बढ़ाई। लुधियाना में जन्म शताब्दी रथ के साथ जुड़ी कार रैली ने उसे भव्य शोभायात्रा का स्वरूप प्रदान किया था। फिरोजपुर के फाजिल्का, अबोहर में गाँव-गाँव में पूजन-स्वागत का नजारा देखने वालों का मन श्रद्धा से सराबोर हो उठा। भटिण्डा की एक कॉलोनी में आयोजित कार्यक्रम में युग निर्माण आन्दोलन को सफल बनाने का जोरदार उत्साह देखा जा सकता था। पटियाला के कार्यकर्त्ता अपने नगर के हर सड़क-मोहल्ले में जन्म शताब्दी रथ ले गये और भव्य स्वागत समारोह आयोजित कराये। सरहिंद नवीन शाखा की युवाशक्ति ने अपने पूरे नगर को जन्म शताब्दी तीर्थयात्रा के स्वागत में होर्डिंग, तोरण द्वारों से दुल्हन की तरह सजा रखा था।

वृक्षारोपण कर सँजोईं स्मृतियाँ

मेरठ (उत्तर प्रदेश)

९ जुलाई की सायं जन्म शताब्दी रथ का मेरठ नगर आगमन पर भव्य स्वागत हुआ। अगले दिन भव्य नगर शोभायात्रा निकाली गयी। जगह-जगह रथ के स्वागत में तोरण द्वार और पताकाएँ लगायी गयी थीं।

शक्तिपीठ कल्याण नगर पर मुख्य समारोह आयोजित हुआ। वहाँ जन्म शताब्दी के कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री सुखदेव शास्त्री ने नगरवासियों को जन्म शताब्दी महोत्सव का आमंत्रण दिया। २५ वर्षों से मिशन के प्रचार-प्रसार में जुटे १५ वरिष्ठ परिजनों का शॉल, श्रीफल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ कल्याण नगर के रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में एक शिलापट्ट का पूजन भी शांतिकुंज प्रतिनिधि द्वारा किया गया। जन्म शताब्दी की पावन स्मृति में उन्होंने वृक्षारोपण भी किया। ५०० पौधों का वितरण हुआ। उल्लेखनीय है कि मेरठ जिले ने इस वर्ष ५ हजार पौधे रोपने का संकल्प लिया है।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

इन्दौर (मध्य प्रदेश)

इंदौर के जाने माने चिकित्सक एवं गायत्री शक्तिपीठ कनाडिया, रविंद्र नगर के ट्रस्टी डॉ. एस.एन. गोयल का ११ जून (गायत्री जयंती) को ६१ वर्ष की अवस्था में

डॉ. एस.एन. गोयल

निधन हो गया। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने उनके निधन पर अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि मैंने एक अच्छा मित्र और इंदौर शहर ने एक अच्छा सर्जन खो दिया है। उल्लेखनीय है डॉ. गोयल आदरणीय डॉ. प्रणव जी के मेडिकल कॉलेज के सहपाठी और मिशन के प्राणवान कार्यकर्त्ता थे। वे जोड़ प्रत्यारोपण शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ थे।

मुंबई (महाराष्ट्र)

उत्तर पश्चिम मुंबई के सक्रिय कार्यकर्त्ता भयंदर निवासी श्री चतुर्भुज रघुनाथ निर्मल का दिनांक १२ जुलाई को ८७ वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। सन् १९७४ में मिशन से जुड़ने के बाद झोला पुस्तकालय को उन्होंने अपनी सक्रियता की धुरी बनाया और उसे जीवन के अंतिम क्षण तक चलाते रहे। उन्होंने अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा से संचालित वाङ्मय टोलियों में भी अपनी सेवाएँ प्रदान की थीं।

जोधपुर (राजस्थान)

२४ जून को जोधपुर के नैष्ठिक कार्यकर्त्ता श्री दाउलाल मिश्रा का ८८ वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। वे भारतीय रेल में सेवाएँ प्रदान करते हुए सन् ५८ में मिशन के संपर्क में आये थे। गायत्री परिवार एवं युगनिर्माण योजना ट्रस्ट जोधपुर के ट्रस्टी रहते हुए उन्होंने मिशन की अविस्मरणीय सेवा की है। वे सन् ५७ से राजस्थान गौड़ ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष भी रहे।

द्वारका, दिल्ली

द्वारका क्षेत्र की सक्रिय कार्यकर्त्ता श्रीमती निर्मला मोदी का १५ जुलाई को ४९ वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। शांतिकुंज के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री वरदीचंद्र चौधरी की सुपुत्री स्व. श्रीमती निर्मला देवी की मंत्र लेखन साधना में गहन आस्था थी। वे स्वयं मंत्रलेखन करतीं और अन्य लोगों से भी करातीं रहीं। श्री वरदीचंद चौधरी ने साहित्य ब्रह्मभोज कर अपनी बेटी को भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की।

सेंधवा, बड़वानी (मध्य प्रदेश)

श्री पिताम्बर चौधरी की धर्मपत्नी और महिला मण्डल खेतिया की समर्पित कार्यकर्त्ता श्रीमती दगुबाई चौधरी का २८ जून को देहावसान हो गया। ७५ वर्षीया श्रीमती चौधरी ने अपने क्षेत्र में नारी जागरण व कुरीति उन्मूलन के लिए अविस्मरणीय कार्य किया है।

शांतिकुंज एवं समस्त गायत्री परिवार उपरोक्त एवं इन्हीं दिनों दिवंगत हुईं समस्त देवात्माओं को शांति-सद्गति प्राप्त हो, उनके परिवारीजनों को इस आघात को सहने की शक्ति मिले, ऐसी प्रार्थना माँ भगवती गायत्री एवं पावन गुरुसत्ता से करता है।

विचार क्रांति के लिए हुए कुछ प्रभावशाली प्रयोग

जिला कारागार को गोद लिया

जगाधरी, यमुनानगर (हरियाणा)

गायत्री परिवार यमुना नगर और ओम सेवा संस्थान ने जेल अधीक्षक श्री रतन सिंह के मुख्य सहयोग से जिला कारागार, जगाधरी में एक कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें बंदियों के कल्याण के लिए जिला कारागार में नियमित अभियान चलाने की घोषणा की गयी। श्रीमती शारदा इस्सर ने इस अवसर पर साप्ताहिक गायत्री यज्ञ एवं स्वाध्याय का क्रम आरंभ करने, बंदियों को मोमबत्ती, दियासलाई, अचार, मुरब्बा, दोने पत्तल जैसे उद्योगों का प्रशिक्षण देने की घोषणा की।

जेल प्रशासन बंदियों के उत्कर्ष के लिए कर रहा है आदर्श- अनुकरणीय प्रयास

जेल अधीक्षक महोदय ने इस अवसर पर कहा कि अखिल विश्व गायत्री परिवार जिला कारागार जगाधरी को गोद लेता है, तो उन्हें जेल प्रबंधन की ओर से पूरा-पूरा सहयोग मिलेगा।

आरंभ में जेल अधीक्षक महोदय ने उनके द्वारा बंदियों के कल्याण के लिए चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी दी। उनके प्रयासों से आयोजकगण अभिभूत दिखाई दिये। जेल की स्वच्छता, सुव्यवस्था और हरीतिमा देखते ही बनती थी। अधीक्षक महोदय ने बंदियों को गायत्री परिवार के अभियान और उद्देश्य का परिचय दिया।

गायत्री परिवार की ओर से श्री एन.के. शर्मा ने गायत्री साधना से जीवन धन्य बनाने की प्रेरणा दी। परिव्राजक श्री भवानी सिंह यादव ने प्रतिकूलताओं के बीच जीवन के उत्कर्ष का विश्वास दिलाया। ओम सेवा संस्थान के श्री सुशील आर्य ने बंदियों के बच्चों के लिए जेल प्रबंधन द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों के लिए खेलने के सामान, चार्ट, पुस्तकें प्रदान की। गायत्री परिवार की ओर से मंत्र लेखन के लिए बंदियों को निःशुल्क पुस्तकें प्रदान की गयीं।

जिला कारागार, जगाधरी की सफाई व्यवस्था देखते ही बनती थी। पूरे प्रांगण में वृक्षारोपण किया गया है, फूलों के पौधे लगाकर प्रदूषणमुक्त वातावरण तैयार किया गया है। यह कारागार सही अर्थों में पर्यावरण सुरक्षा का संदेश देता है।
श्री एन.के. शर्मा (गायत्री परिवार के प्रमुख प्रतिनिधि)

कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर

अयोध्या, फैजाबाद (उत्तर प्रदेश)

गायत्री शक्तिपीठ रामकोट पर एक कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ, जो सात दिनों तक चला। इसमें ३० परिजनों ने भागीदारी की। कार्यकर्त्ताओं की बौद्धिक, कर्मकाण्ड, संगीत की दक्षता बढ़ाने के साथ उनमें आत्म समीक्षा का भाव विकसित करने की दृष्टि से यह शिविर आयोजित किया गया था। प्रशिक्षणार्थियों को १०८ घरों में दीपयज्ञ करने अथवा प्रभावी जनसंपर्क करते हुए १०८ समयदानी-अंशदानी तैयार करने के दायित्वों की याद दिलाई गयी।

श्री साहेब प्रसाद शुक्ल के अनुसार जोनल केन्द्र पर इस तरह के प्रशिक्षण शिविर आगे भी चलाये जाने के साथ जोन के अन्य जिलों-ब्लॉकों में ऐसे शिविर आयोजित किये जायेंगे, जिससे युग निर्माण आन्दोलन सतत प्रगति पथ पर अग्रसर रहे। इसके अलावा शक्तिपीठ पर ९ दिवसीय साधना शिविर और कुटीर उद्योग प्रशिक्षण शिविर प्रारंभ की योजना बनाई जा रही है।

तनाव प्रबंधन कार्यशाला

रुद्रपुर (उत्तराखण्ड) - नगर के पारले बिस्किट प्लांट में तनाव प्रबंधन कार्यशाला का आयोजन हुआ, जिसका संचालन देसंविवि के योग आचार्य श्री राजू अधिकारी ने किया। कार्यशाला में मल्टीमीडिया के माध्यम से दैनिक जीवन में उत्पन्न होने वाले तनाव के कारणों पर प्रकाश डालते हुए उनका आध्यात्मिक समाधान सुझाया गया। शांतिकुंज प्रतिनिधि ने कहा कि तनाव का निवारण करते समय स्वास्थ्य के लिए चिंतित होने की अपेक्षा अपनी मानसिकता को बदला जाये और सदा प्रफुल्लित रहने का प्रयास किया जाये तो यौगिक क्रियाएँ अधिक कारगर होती हैं।

इस कार्यशाला में प्लांट के ६० से अधिक वरिष्ठ कर्मचारियों ने भाग लिया। गायत्री परिवार की ओर से श्री अशोक छाबड़ा, अनुज अग्रवाल एके त्रिपाठी प्रमुख रूप से उपस्थित थे। ऐसी ही एक तनाव प्रबंधन कार्यशाला का आयोजन टीवीएस टायर्स, रूद्रपुर में भी किया गया।

नवचेतना विस्तार में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं देवियाँ

जयपुर (राजस्थान)

जयपुर के एक महिला मण्डल की बहिनों-चंदा पाण्डेय, शांति शर्मा, निर्मला, संगीता अग्रवाल आदि की टोली ने जन्म शताब्दी के जन जागरण अभियान के अंतर्गत अब तक १८२ कार्यक्रम सम्पन्न कराये हैं। इस क्रम में उनको केन्द्रीय कारागार जयपुर में जेल उप अधीक्षक श्रीमती मोनिका अग्रवाल के सहयोग से एक बड़ी सफलता मिली है। महिला कारागार में उनके द्वारा चलाये जा रहे आस्था संवर्धन अभियान का ही परिणाम है कि बंदी बहिनों की विचारधारा बदल रही है। वे पहले अपने को जेल में सजा पाती अनुभव करती थीं, अब वे नित्य साधना-स्वाध्याय में निरत रहते हुए आश्रम जैसा जीवन व्यतीत करती अनुभव कर रही हैं। उन बहिनों ने वसंत पर्व से ४० दिवसीय साधना अनुष्ठान भी सम्पन्न किया।

उप जेल अधीक्षिका श्रीमती मोनिका अग्रवाल स्वयं गायत्री उपासक हैं और पूज्य गुरुदेव का साहित्य नियमित रूप से पढ़ती हैं। वे बराबर मंत्र लेखन करती रहती हैं।

बहिनों की टोली ने बसंत पर्व के बाद विद्यालयों में व्यापक संपर्क करते हुए विशाल स्तर पर मंत्र लेखन साधना अभियान चलाया था। अब तक वे इसके अंतर्गत ८००० शताब्दी मंत्रलेखन पुस्तिकाएँ लिखवा चुकी हैं।

कानपुर (उत्तर प्रदेश)

गायत्री शक्तिपीठ किदवईनगर में २ जुलाई को नारी 'उत्थान आंदोलन की दिशाधारा' विषय पर संगोष्ठी हुई। इसमें

कानपुर में आयोजित हुआ नारी जागरण सम्मेलन

शिक्षाविदों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने अपने-अपने विचार प्रकट किये। संगोष्ठी में बहिनों को अपनी सनातन संस्कृति की मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए उनकी गौरव-गरिमा तथा सामाजिक दायित्वों का बोध कराया गया। कानपुर उपजोन प्रभारी श्री रामचन्द्र गुप्ता, श्री आनन्द सिंह रावत आदि ने पूज्यवर के विभिन्न उद्धरणों के साथ नारियों के विकास पर बल दिया।

इस अवसर पर शिक्षाविदों, महिला एवं बच्चों के विकास के लिए कार्य करने वाले सामाजिक कार्यकर्त्ताओं और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत महिला एथलीटों का शॉल, युग साहित्य आदि भेंट कर सम्मान किया गया। संगोष्ठी का आयोजन श्रीमती कमला मिश्रा ने तथा संयोजन श्रीमती प्रभा तिवारी ने किया।

बाल निर्माण का विशिष्ट प्रयोग

कन्याओं के लिए हुआ २४ कुण्डीय यज्ञ, १२-१३ वर्ष की १००८ कन्याओं ने किया देवपूजन, मंच संचालन भी कन्याओं की टोली ने ही किया

वडोदरा (गुजरात)

नगर की श्री दर्शन सोसायटी माणेजा में वर्षाबेन आहीर के घर वडोदरा की गायत्री परिवार शाखा द्वारा बाल निर्माण का एक विशिष्ट प्रयोग किया गया। परिजनों ने २६ नवंबर को वहाँ एक ऐसा २४ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ किया, जिसमें नन्हीं देव कन्याओं ने यज्ञ-पूजन किया और देव कन्याओं की प्रशिक्षित टोली ने ही पूरे यज्ञ का संचालन किया।

इस यज्ञ में १००८ देव कन्याओं ने देवपूजन और यज्ञ किया, जबकि कार्यक्रम का स्वरबद्ध, संगीतमय ओजस्वी संचालन-प्रवचन आदि १२-१३ वर्ष वय के मानसी प्रजापति, कीर्ति, प्राची, विधि और कार्तिक की टोली ने किया। इन बच्चों की भावमय प्रस्तुति ने पूरे वातावरण में दिव्यता का संचार कर दिया। मंत्र जीवंत और प्रभावशाली थे। जैसे ही वरुण देवता का आवाहन किया गया, तपती धरती पर शीतलता का सिंचन करने वरुण देव आ पहुँचे। सुरेखाबेन तलाटी ने इस टोली को बड़ी मेहनत और लगन से प्रशिक्षण दिया था।

इस कार्यक्रम की सफलता के लिए स्थानीय कार्यकत्ताओं ने खूब मेहनत की। यज्ञ में लगभग ४०० कार्यकर्त्ता उपस्थित हुए। श्रीमती वर्षा बेने आहीर ने पूरी कार्यक्रम की व्यवस्था बनायी। इस अवसर पर गायत्री तपोभूमि मथुरा के प्रतिनिधि श्री घनश्याम भाई भी उपस्थित थे। उन्होंने बच्चों के नवनिर्माण के लिए समर्पित प्रयासों की सराहना करते हुए संचालक बाल टोली का मंगल तिलक किया।

यह अपनी तरह का पहला कार्यक्रम था। इसके साथ अनिल भाई पटेल, सतीश भाई, जिगर भाई और कई अन्य कार्यकर्त्ताओं ने वृक्षारोपण भी किया।

प्रांतीय स्तर पर प्रथम रहे विद्यार्थियों को मिली विशेष सुविधा

देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में प्रांतीय स्तर पर प्रथम रहे विद्यार्थियों को प्रवेश के समय वरीयता प्रदान की जाती है। जुलाई-२०११ में इस व्यवस्था का लाभ लेते हुए १२ वीं कक्षा में प्रांतीय स्तर पर प्रथम रहे दो विद्यार्थियों ने प्रवेश प्राप्त

चि. रघुवीर पटेल

चि. सुरेन्द्र कुमार

किया है। ये विद्यार्थी हैं मध्य प्रदेश प्रांत में ग्राम बलकवाड़ा, जिला खरगोन निवासी श्री रामलाल पटेल के सुपुत्र चि. रघुवीर पटेल और छत्तीसगढ़ प्रांत निवासी श्री उदित नारायण पटेल के सुपुत्र चि. सुरेन्द्र कुमार। दोनों ही विद्यार्थियों ने बी.एससी. प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया है।

बुरे का समर्थन और अनुमोदन न करना ही नहीं, बुराई का प्रतिकार न करना भी एक बड़ी बुराई है।

जन्मशताब्दी के ऊर्जा प्रवाह का विदेशों में भी है जबरदस्त प्रभाव

108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ मनाया गया गायत्री चेतना केन्द्र, अनाहेम का प्रथम वार्षिकोत्सव

अनाहेम, कैलीफोर्निया (अमेरिका)

१६ और १७ जुलाई २०११ अमेरिका के गायत्री परिवार के प्रति निष्ठावान लोगों के लिए बड़े सौभाग्यशाली सप्ताहांत के दिन थे, जिन दिनों सैकड़ों परिजनों ने गायत्री चेतना केन्द्र अनाहेम पर एकत्रित होकर गुरुपूर्णिमा, गायत्री चेतना केन्द्र में प्राण प्रतिष्ठा का वार्षिकोत्सव और पूज्य गुरुदेव का जन्म शताब्दी समारोह बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया। यह कार्यक्रम १०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। शांतिकुंज से पहुँची प्रो. प्रमोद भटनागर, श्री शिवनारायण प्रसाद और श्री पुष्कर राज की टोली ने इसका संचालन करते हुए पूरे वातावरण में आलौकिक

दिव्यता का संचार कर दिया।

यज्ञ स्थल को झण्डे और अत्यंत प्रेरक बैनरों के साथ सजाया गया था। वहाँ भारत और अमेरिका के ध्वज साथ-साथ लहरा रहे थे।

महायज्ञ का शुभारंभ दिव्य और भव्य कलश यात्रा से हुआ। सैकड़ों बहिनों ने पवित्र कलश, उन पर ज्वारे, गायत्री मंत्र लिखित पुस्तकें और पूज्य गुरुदेव की पुस्तकें मस्तक पर धारण कर यात्रा पूरी की।

कलश यात्रा के यज्ञ स्थल पर लौटने पर शांतिकुंज के युग गायकों-सर्वश्री शिवनारायण, पुष्कर राज और सिद्धार्थ ओझा के भावभरे ओजस्वी गीतों ने जनमन में आस्था की उष्मा का संचार किया। प्रो. भटनागर ने पूज्य गुरुदेव और उनके क्रांतिकारी मिशन का विस्तृत परिचय दिया। पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी को विचार क्रांति की शताब्दी बताते हुए उन्होंने कहा कि उन्हें जीवन में उतारते हुए जन-जन तक पहुँचाना ही पावन गुरुसत्ता को सबसे प्रिय श्रद्धांजलि होगी।

महायज्ञ में मंच पर देवपूजन का सौभाग्य चेतना केन्द्र की सेवा में पूरी तरह समर्पित श्री शंकर बारोट और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नीरूबेन को मिला। प्रमुख कार्यकर्त्ता, बाल संस्कार शाला के शिक्षक व कई गणमान्यों सहित १५१ जोड़ों ने देवपूजन किया। श्री महेश भट्ट ने सन् ७६ में ही लॉस एंजिल्स में गायत्री चेतना केन्द्र की स्थापना करने वाले ८३ वर्षीय श्री चीनूभाई ठक्कर सहित कुछ प्रमुख कार्यकर्त्ताओं के योगदान को बड़ी श्रद्धा के साथ सराहा। श्री कौशिक पटेल ने पूज्य गुरुदेव के जीवन के विषय में अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. प्रकाश नारायण ने २००० लोगों पर वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के संदर्भ में किये शोधों का निष्कर्ष बताते हुए इस दिशा में लोगों की आस्था जाग्रत् की। श्री भूपेन्द्र सोनेजी ने यज्ञधूम्र और यज्ञशाला की माटी के परीक्षण की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि यज्ञ से प्रदूषण की बात निराधार है, बल्कि यज्ञधूम्र से वातावरण में व्याप्त बैक्टेरियाओं का नाश होता है, वातावरण शुद्ध होता है। दो दिवसीय समारोह में नुक्कड़ नाटक, लोकनृत्य, गरबा, देशभक्ति गीत आदि भी प्रस्तुत किये गये।

कनाडा

ओंटारियो, कनाडा। वेस्ट ओंटारियो शाखा ने २३ जुलाई को ब्रांटफोर्ड शहर के एअरपोर्ट कम्युनिटी हॉल में गुरुपूर्णिमा महोत्सव का आयोजन किया, जिसका संचालन शांतिकुंज से पहुँची श्री शांतिलाल पटेल, श्री प्रज्ञेश्वर दास और श्री पुष्कर राज की टोली ने किया। प्रांत में आयोजित अपनी तरह का यह सबसे बड़ा आयोजन था। गुरुभक्ति के भावप्रवाह की वैतरणी में मन के कषाय-कल्मष धुलते चले गये। उपस्थित सभी परिजनों ने दीक्षा या प्रायचित्त दीक्षा संस्कार कराया।

इस कार्यक्रम में पूज्य गुरुदेव के जीवन दर्शन, शांतिकुंज, देसंविवि आदि को एक प्रदर्शनी, मल्टीमीडिया आदि के सहयोग से समझाया गया था। कार्यक्रम के बाद बुक स्टॉल पर लोगों की उपस्थिति पूज्य गुरुदेव के विचारों के प्रति समर्पण भाव को दर्शाती रही। मूल कनाडियन भी भाषा के अवरोध के बावजूद भक्ति की सरिता में प्रवाहित हो गये। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री देवांग सिंह एवं श्रीमती सुनीता सिंह ने अद्वितीय परिश्रम किया।

लेस्टर, यू.के. में आयोजित हुआ चार दिवसीय समारोह, 400 लोगों ने दीक्षा ली

लेस्टर (यू.के.) : गायत्री चेतना केन्द्र, लेस्टर पर गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष्य में मार्मिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। गुरु पर्व के निमित्त १४ जुलाई से ही प्रातः सायं विशेष जप का क्रम आरंभ हो गया था, जिसका समापन १७ जुलाई को हुआ।

गुरुपर्व का संदेश देते शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. ओ.पी. शर्मा

गुरुपर्व पर सद्गुरु के सच्चे शिष्य बनने की आकांक्षा और आत्मिक प्रगति की कामना से बड़ी संख्या में लोग आये। शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधि डॉ. ओ.पी. शर्मा, श्री ओंकार पाटीदार और छबिराम गढ़िया की टोली ने अपनी भावभरी गीत-संगीतमय प्रस्तुति से उनकी आस्था को नई ऊचाइयों पर प्रतिष्ठित किया। डॉ.शर्मा जी ने कहा कि परिवार और समाज के साथ समरसता बनाये रखने के साथ आत्मिक विकास के बहुमूल्य सूत्र दिये। लगभग ४०० लोगों को गुरुदीक्षा दिलाते हुए उन्होंने कहा कि पतन निवारण के लिए किया गया समयदान और अंशदान ही परम पूज्य गुरुदेव के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है, जो उनके जन्म शताब्दी वर्ष में नितांत अनिवार्य हो जाती है।

गुरुपर्व ५ कुण्डीय यज्ञ के साथ मनाया गया, जिसका डॉ. गुप्ता ने दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया। कार्यक्रम समापन पर सभी ने चरण पादुकाओं को नमन कर संकल्प श्रद्धांजलि अर्पित की। लगभग १०० लोगों ने हरिद्वार में आयोजित हो रहे शताब्दी समारोह में भागीदारी की सहमति प्रदान की। श्री इंद्रजीतभाई मिस्त्री, मनसुख भाई, सुरेश भाई रावल आदि इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित थे।

मस्कत

मस्कत। पिछले तीन दशकों में मस्कत में युग चेतना का प्रसार-विस्तार कर रही गायत्री परिवार की शाखा के सैकड़ों परिजनों ने गुरुपूर्णिमा पर्व जन्म शताब्दी के विशेष उल्लास के साथ मनाया। पर्व पर आयोजित पाँच कुण्डीय यज्ञ में सैकड़ों लोगों ने भाग लेते हुए विश्वमानव के कल्याण की कामना की। परिजनों ने जन्म शताब्दी महोत्सव के लिए शांतिकुंज को अपना विशेष अंशदान भी भेजा।

गुरुपूर्णिमा पर मस्कत में हुआ गायत्री यज्ञ

सिंगापुर

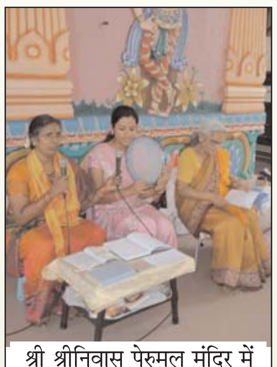

श्री श्रीनिवास पेरुमल मंदिर में यज्ञ संचालन करती बहिनें

विजयवाड़ा, आंध्रप्रदेश निवासी सोमिशेट्टी लक्ष्मी देवी एवं सम्बाशिव राव ने अपने सिंगापुर प्रवास पर वहाँ के श्री श्रीनिवास पेरुमल मंदिर, सेरंगून रोड़ में पाँच कुण्डीय यज्ञ के साथ गुरुपूर्णिमा पर्व मनाया। यज्ञ में १०० से अधिक लोगों ने भाग लेते हुए युगऋषि पूज्य गुरुदेव का जीवन परिचय पाया और उनके दिव्य मिशन में अपना भरपूर योगदान देने के संकल्प के साथ विश्वमानवता के कल्याण के लिए आहुतियाँ समर्पित कीं। उल्लेखनीय है कि श्रीमती लक्ष्मीदेवी अपने पुत्र के पास गयी थीं, उन्होंने वहाँ रहने वाले हिंदुओं से संपर्क कर पहली बार मिशन का एक बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया था, जिसमें स्थानीय बहिन शांता महेश्वरी का प्रमुख सहयोग मिला। श्रावणी पूर्णिमा पर भी ऐसा ही कार्यक्रम आयोजित करने के संकल्प लिये गये।

काठमाण्डू के केन्द्रीय कारागार में वाङ्मय स्थापना

नेपाल की राजधानी काठमाण्डू के नैष्ठिक परिजनों ने परम पूज्य गुरुदेव के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में विद्या विस्तार का विशेष अभियान चलाते हुए केन्द्रीय कारागार काठमाण्डू की तीनों शाखाओं में पूज्य गुरुदेव के वाङ्मय की स्थापना करायी। यह स्थापना गृह मंत्रालय नेपाल के सचिव श्री लीलामणि पौड्याल की मुख्य उपस्थिति में समारोह पूर्वक हुई। उल्लेखनीय है कि वे पिछले कुछ वर्षों से युग साहित्य का नियमित रूप से स्वाध्याय कर रहे हैं।

सचिव महोदय ने जेलर श्री तीर्थराज कोईराला को कुछ पुस्तकें हस्तांतरित करते हुए साहित्य स्थापना की औपचारिकताएँ पूरी कीं। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह साहित्य जीवन को नयी राह दिखाकर आशा और उल्लास का संचार करने वाला है। जो बंदीगण अपने विचारों का शोधन और व्यक्तित्व का विकास करना चाहते हैं, वे इस साहित्य को अवश्य पढें।

इस अवसर पर गायत्री परिवार के अनेक कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। श्रीमती सावित्री काफ्ले ने जन्म शताब्दी वर्ष में न्यूनतम १०० स्थानों पर वाङ्मय स्थापना का संकल्प दोहराया। यह अभियान नेपाल के विभिन्न शहरों में पुस्तक मेलों के आयोजन के साथ चल रहा है। कार्यक्रम का संचालन श्री राजू अधिकारी ने किया। उल्लेखनीय है कि काठमाण्डू के केन्द्रीय कारागार में २००० से अधिक बंदी निरुद्ध हैं।

जीवन का जितना समय सच्चिंतन में और सत्कर्म में बीता, उतना ही जीवन सार्थक माना जाना चाहिए।

स्वामी दयानंद सरस्वती का शताभिषेक समारोह, शांतिकुंज ने किया अभिनंदन

कोयंबटूर (तमिलनाडु) – पूज्य स्वामी दयानंद सरस्वती जी मेरे जीवनादर्शों में से एक हैं। उनकी शिक्षाओं ने मेरे जीवन के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गायत्री परिवार उनकी हर पहल में पूरा सहयोग प्रदान करेगा।

स्वामी विवेकानंद और महर्षि अरविंद जी के उद्धरणों के साथ आदरणीय डॉ. साहब ने कहा कि विश्व मानवता इन दिनों सतयुग की वापसी के लिए परिवर्तन के महान क्षणों से गुजर रही है। हिंदुओं को इन दिनों कड़ी परीक्षाओं से गुजरना पड़ रहा है। परीक्षा की इस घड़ी में हम सबको संगठित होकर सारे विश्व में पारिवारिकता का विस्तार करना होगा। दैवी शक्तियाँ जीतेंगी और असुरता का पतन सुनिश्चित है। आनेवाले १० वर्षों में भारत जगद्गुरु बनकर रहेगा। इसके लिए उन्होंने गायत्री साधना से जुड़कर अनुकूल वातावरण तैयार करने का अनुरोध सभी से किया।

शमाभिषेकम् महोत्सव में मंचासीन गणमान्य और इंसेट में आदरणीय डॉ. प्रणव जी स्वामी दयानंद जी से चर्चा करते हुए

आर्ष विद्या गुरुकुलम के प्रमुख सुप्रसिद्ध संत स्वामी दयानंद सरस्वती जी के ८१वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में २० से २२ जुलाई की तारीखों में 'शताभिषेकम' का आयोजन हुआ। शांतिकुंज प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उनके अलावा सन्यास आश्रम प्रमुख स्वामी विश्वेश्वरानंद तीर्थ जी, बाबा रामदेव, विहिप प्रमुख श्री अशोक सिंघल, प्रमुख सरसंघ चालक श्री मोहन भागवत, राम माधव, बालासुब्रह्मण्यं, आर्ट ऑफ लिविंग के प्रतिनिधि, स्वामी माधवप्रिया दास, स्वामी निर्मलानंद दास आदि मंचासीन थे।

सभा को संबोधित करते आदरणीय डॉ. साहब

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने शॉल उढ़ाकर और पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंटकर पूज्य स्वामी दयानंद सरस्वती जी का सम्मान किया। उन्हें इस अवसर पर देसंविवि का स्मृति चिह्न भी भेंट किया गया।

कार्यकर्त्ता गोष्ठी

इससे पूर्व रेसीडेंसी होटेल में प्रात: १० बजे गायत्री परिवार कोयंबटूर के परिजनों की गोष्ठी हुई। आदरणीय डॉ. साहब ने इस अवसर पर चार मंजिला गायत्री चेतना केन्द्र निर्माण के लिए पाँच ईंटों का पूजन किया और इसके निर्माण और संचालन संबंधी मार्गदर्शन प्रदान किया। उन्होंने कहा कि यह दक्षिण का अपनी तरह का पहला गायत्री चेतना केन्द्र होगा, जो केरल और तमिलनाडु का केन्द्र बनेगा। श्री ओमप्रकाश चांडक, श्री देवी प्रसाद चंदू, श्री कैलाश अग्रवाल, श्री एस.पी. सम्राज, श्री गोपाल माहेश्वरी आदि सभी कार्यकर्त्ताओं को चेतना केन्द्र के निर्माण के लिए पावन गुरुसत्ता की ओर से शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

जन्मशती के महापर्व पर सृजन-चेतना जगायेगी नारी
शांतिकुंज की बहिनों ने पूरी कर ली है तैयारी

जन्म शताब्दी समारोह की तैयारियाँ

नवयुग का नेतृत्व नारी करेगी। 'इक्कीसवीं सदी–नारी सदी' का नारा देते हुए इस तथ्य का स्पष्ट उद्घोष स्वयं परम पूज्य गुरुदेव ने ही किया है। इस क्रम में बहिनों का प्रमुख दायित्व है सृजन चेतना में निखार, सरसता का संचार, आत्मीयता का विस्तार। पूज्य गुरुसत्ता के जन्म शताब्दी महोत्सव में जाग्रत् नारी का यह स्वरूप प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए शांतिकुंज में बहिनों ने जुलाई माह से ही कमर कस ली है।

शांतिकुंज का महिला मण्डल शताब्दी समारोह में अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने की तैयारी में जुट गया है। उन्हें १५५१ कुण्डीय यज्ञशाला–संस्कार शाला के पौरोहित्य, युगसंदेश, युगसंगीत से लेकर सांस्कृतिक कार्यक्रम, स्वावलम्बन, शिक्षा और सज्जा, सुरक्षा के अनेक दायित्व सँभालने हैं। शांतिकुंज में कई विभागों में कार्य आरंभ हो गये हैं। सैकड़ों बहिनें इन कार्यों में जुटी हैं। वहाँ लगने वाली प्रदर्शनी में गृहसज्जा, दैनिक जरूरत की चीजों के निर्माण, देवमंचों की सज्जा जैसे कार्य तेजी से चल रहे हैं। दूसरी ओर बहिनें बैंड वादन, संगीत जैसे कार्यों का अभ्यास भी पूरी तन्मयता से कर रही हैं। पूरे देश के भाई–बहिनों में जन्म शताब्दी महोत्सव के लिए समयदान के लिए जो उमंग है, शांतिकुंज के भाई–बहिनों में भी वैसा ही उत्साह देखा जा सकता है। बहिनों की सक्रियता में यही उत्साह झलकता दिखाई देता है।

जन्म शताब्दी समारोह में शांतिकुंज आने वाले समयदानी ध्यान दें

हरिद्वार में ६ से १० नवम्बर २०११ की तारीखों में आयोजित हो रहे बृहद् कार्यक्रम की तैयारियाँ आरंभ हो गयी हैं। जो परिजन इसमें समयदान के लिए आना चाहते हैं, वे ध्यान दें कि सभी के लिए आवासीय व्यवस्था टेंट-शामियानों में की जानी है। अक्टूबर-नवम्बर में मौसम बदलने लगता है, सर्दी आरंभ हो जाती है।

➲ अत: श्रमशील व्यक्ति ही आयें, चाहे वे तकनीकी विभागों के ही क्यों न हों।

➲ अपने साथ ओढ़ने, बिछाने के साधन और पहनने के कपड़े पर्याप्त मात्रा में लायें। उन दिनों कम से कम ३ कम्बलों की आवश्यकता पड़ सकती है।

➲ अपने साथ बच्चों वृद्धों, कमजोरों को न लायें। बड़े कार्यक्रमों में परिवारी जनों को साथ लाने का लोभ संवरण कर पाना कठिन ही है, परंतु परिस्थितियों को देखते हुए ऐसा कठोर निर्णय तो लेना ही पड़ता है, ताकि बीच में परेशानी खड़ी न हो।

➲ अपना वोटर पहचान पत्र या कोई और सरकारी मान्यता प्राप्त पहचान पत्र अवश्य लेकर आयें।

➲ अपने साथ गहने, नकदी आदि कीमती सामान लेकर न आयें। अपने स्वास्थ्य और सुरक्षा संबंधी सभी सावधानियों का पूरा-पूरा ध्यान रखें।

➲ कब तक और कितने परिजनों के साथ आ रहे हैं, इसकी सूचना शांतिकुंज के समयदान कार्यालय को अविलंब भिजवा दें।

➲ मिशन की संगठित इकाइयाँ अपने क्षेत्र के समयदानियों और उनके शांतिकुंज आने की अवधि की सूचना भी यथाशीघ्र शांतिकुंज को भेज दें।

नोट : प्रज्ञा अभियान के गत (१ अगस्त २०११) अंक में पृष्ठ ९ पर गुरुपूर्णिमा के समाचार छपे थे। उसकी तारीखों में जुलाई की जगह भूलवश अगस्त छप गया है। इस भूल के लिए हमें खेद है। –**संपादक**

मनुष्य शरीर नहीं, आत्मा है। सही मायनों में मनुष्यता का उत्थान चाहते हो तो आत्मा को बलवान बनाने की चेष्टा करो।

जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में युगऋषि को दक्षिण भारत की भावभरी श्रद्धांजलि

चेन्नई में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न, उभरे आस्था के अविस्मरणीय प्रसंग

चेन्नई (तमिलनाडु)

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की प्रमुख उपस्थिति में दिनांक २२ से २४ जुलाई की तारीखों में चेन्नई के ए.एम. जैन कॉलेज प्रांगण में एक विशाल १०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ आयोजित हुआ। चेन्नई शाखा ने नगर के अनेक स्वयंसेवी संगठनों के सहयोग से इसे परम पूज्य गुरुदेव के जन्म शताब्दी वर्ष में उन्हें एक भावभरी श्रद्धांजलि के रूप में आयोजित किया था। हजारों लोगों ने इसमें भाग लेते हुए शताब्दी महोत्सव और युग चेतना विस्तार के लिए अपनी भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की।

आदरणीय डॉ. प्रणव जी ने कहा–

आदरणीय डॉ. साहब ने अपने २३ जुलाई के उद्‌बोधन में कहा कि समय बड़ी तेजी से बदल रहा है। वर्ष २०१५ तक हमें सतयुग की स्पष्ट झाँकी दिखाई देने लगेगी। स्वामी विवेकानंद के मद्रास में दिये गये सुप्रसिद्ध भाषण का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि स्वामी जी का संकल्प इन्हीं दिनों साकार होने जा रहा है। उन्होंने दक्षिणी प्रांतों की धार्मिक आस्था की भरपूर सराहना करते हुए कहा कि जन्म शताब्दी वर्ष के बाद अगले दिनों मिशन का एक मुख्य उद्देश्य दक्षिणी प्रांतों में नवचेतना जगाकर वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का विस्तार करना है। इस कार्यक्रम में उन्होंने आगामी दो-तीन वर्षों में चेन्नई, केरल और कर्नाटक में अश्वमेधों के आयोजन की घोषणा की। उन्होंने २००० तमिल अखण्ड ज्योति पत्रिका वितरित करने के एक परिजन के संकल्प की भी खूब सराहना की।

आदरणीय डॉ. साहब चेन्नई के १०८ कुण्डीय महायज्ञ में दीक्षा दिलाते हुए

कलश यात्रा-सफलता का आधार, सिरवी समाज ने किया नेतृत्व

महायज्ञ की आशातीत सफलता में कलश यात्रा ने अहम भूमिका निभाई, जिसका नेतृत्व सिरवी समाज ने किया था। मणिपक्कम् के विशाल एवं भव्य आई माता वढेर से कलश यात्रा प्रारंभ हुई। शिवजी, गायत्री माता, परम पूज्य गुरुदेव, वं.माताजी तथा आईमाता-दुर्गा जी की विशेष झाँकियाँ सजाई गईं। ११०० कलश धारण करने वाली बहिनों में सिरवी समाज, तमिल समाज, गुजराती समाज, मारवाड़ी तथा वैष्णव समाज की बहिनों की बढचढ़ कर भागीदारी रही। पूरा नगर 'गायत्री महामंत्र' और समाज के नवनिर्माण के उद्घोषों से गूँज उठा। यात्रा के समापन पर बहिनों का स्वागत करते हुए तमिलनाडु की प्रमुख कार्यकर्त्ता एस.कस्तूरी अम्मा ने बहिनों को समाज के नवनिर्माण का आधार बताया। डॉ. बृजमोहन गौड़ ने कहा कि हमारे देश की बहिनों में जो देवत्व के भाव हैं, वह सारे विश्व में अद्वितीय हैं। बहिनों की यही भाव-संवेदना सुखद भविष्य का आधार बनेंगी।

विशिष्ट शैली, अमिट प्रभाव

दक्षिण में कर्मकाण्ड की विशिष्ट शैली का अलग आकर्षण है, लेकिन इस महायज्ञ में उत्तर-दक्षिण की शैली के समन्वय ने लोगों में विशिष्ट ऊर्जा और उल्लास का संचार किया। तमिल में भी राष्ट्र के उत्थान और समाज के नवनिर्माण की उमंग जगाने वाले भावभरे प्रज्ञागीत 'नागल वासल पेरुक्क विल्लै कड़उल एप्पड़ि बरुआरो ..(हमने आँगन नहीं बुहारा ...)' आदि गाये गये, जिन्होंने यह अनुभव कराया कि गायत्री परिवार का यह यज्ञ केवल कर्मकाण्ड नहीं, एक आन्दोलन है। कर्मकाण्ड संचालन डॉ. बृजमोहन गौड़, सर्वश्री परमानंद द्विवेदी, उमेश शर्मा, हीरसिंह राजपुरोहित की टोली ने किया। वक्ताओं के हिंदी में दिये उद्‌बोधन और कर्मकाण्ड की टिप्पणियों का तमिल भाषा में अनुवाद कर रही विदुषी श्रीमती एस.उमा बहिन का प्रस्तुतिकरण भी बड़ा प्रभावशाली था।

श्री सरदारमल जैन, श्री शांतिलाल नाहर और श्री तेजराज सुराना आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का सम्मान करने के बाद उनसे मंगल तिलक कराते हुए

स्थानीय प्रभारी बिंदेश्वरी प्रसाद सिंह एवं उत्तम गायकवाड़ ने कार्यक्रम की व्यवस्थाएँ बनाईं। पूर्व तैयारियों में स्थान की उपलब्धता और वर्षा जैसी कई प्रतिकूलताएँ आयीं। सभी इन्हें आस्था की अग्नि परीक्षा मानकर बिना थके, बिना हारे बढ़ते ही रहे और असाधारण सफलता पायी।

दीक्षा संस्कार – जन्म शताब्दी वर्ष के इस विशिष्ट आयोजन में युग चेतना के प्रवाह से जुड़ने की ललक हर व्यक्ति में दिखाई दी। आदरणीय डॉ. साहब ने वहाँ लगभग २००० से अधिक लोगों को गायत्री मंत्र की दीक्षा दिलायी।

विशिष्ट वर्गों से चर्चा

यज्ञ के अलावा आयोजकों ने जनसंपर्क संगोष्ठियों के कई कार्यक्रम चेन्नई में निर्धारित किये थे। भोजन, विश्राम का क्रम जहाँ भी होता, वहीं ५०-१०० विशिष्ट लोगों की गोष्ठियों का क्रम भी साथ होता था। इनके माध्यम से न केवल सैकड़ों लोगों को अध्यात्म की नयी दिशा, नयी प्रेरणा मिली, अपितु पूज्य गुरुदेव के जन्म शताब्दी वर्ष में एक महान अवतारी चेतना के साथ जुड़ने और शताब्दी वर्ष के लिए अनुदान देने के सौभाग्य का भी उन्हें अनुभव हुआ।

दक्षिण जोन संयोजक श्री अश्विनी सुब्बाराव वहाँ मिशन के वर्तमान प्रवाह को गति देने संबंधी मार्गदर्शन प्राप्त करने विशेष रूप से पहुँचे थे। उन्होंने अपनी सर्वोच्च आस्था का परिचय देते हुए शताब्दी महोत्सव के लिए बड़ा अनुदान दिया।

आयोजन स्थल ए.एम. जैन के डायरेक्टरेट कक्ष में डॉ. आर. नरसिंघम्, स्टाफ, स्थानीय 'दिया' के नवयुवक और भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा से जुड़े लोगों की गोष्ठी हुई।

सभी कार्यकर्त्ताओं के साथ भेंट-परामर्श एवं विशेष बैठक हुई, जिसमें हरिद्वार में हो रहे जन्म शताब्दी महोत्सव से जुड़े सौभाग्य और दायित्वों पर चर्चा हुई।

उद्योगपति श्री तेजराज सुराना के आवास पर हुई गोष्ठी में ५० से अधिक उद्योगपतियों और विशिष्ट अभ्यागतों ने शांतिकुंज प्रतिनिधि से वैज्ञानिक अध्यात्मवाद और समाज की वर्तमान व्यवस्था पर चर्चा की।

श्री गोपाल सिंह राजपुरोहित एवं करसन भाई पटेल के यहाँ मध्याह्न भोजन के समय और श्री वंशीलाल राठी व श्रीमती प्रज्ञा दवे के यहाँ हुई गोष्ठियों में भी विशिष्ट महानुभावों से चर्चा हुई।

आदरणीय डॉ.साहब ने श्री एम.एस. जैन की धर्मपत्नी श्रीमती किरन जैन के कष्टों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए हिम्मत बँधायी।

ए.एम. जैन कॉलेज में वाङ्मय स्थापना

पुस्तक मेले में पूज्य गुरुदेव के साहित्य ने बुद्धिजीवियों को बहुत प्रभावित किया। ए.एम. जैन कॉलेज के सेक्रेटरी श्री सरदारमल जैन एवं श्री शांतिलाल नाहर ने समग्र वाङ्मय तथा तमिल-अंग्रेजी में उपलब्ध साहित्य के दो सेट अपने कॉलेज की लाईब्रेरी में स्थापित किये।

राजस्थान पत्रिका का सहयोग

युग निर्माण मिशन के लक्ष्य की पवित्रता तथा स्पष्टता से प्रभावित होकर दैनिक राजस्थान पत्रिका के चेन्नई प्रकाशन के सम्पादक श्री दिलीप चारी ने इस आयोजन के प्रचार-प्रसार में मीडिया पार्टनर की भूमिका निभाई। वे प्रयाज-याज के सभी समाचार एक माह पूर्व से ही अपने अखबार में प्रमुखता से प्रकाशित करते रहे। यह सुयोग उपलब्ध कराने में देसंविवि में पढ़े और इसी प्रकाशन में सेवाएँ प्रदान कर रहे श्री संतोष जी की विशेष भूमिका रही।

> ### बड़े अनुदान दिये
>
> दक्षिण जोन की संकल्पित राशि में से संगठन की ओर से 15 लाख रुपये का अनुदान शांतिकुंज प्रतिनिधि को दिया गया। सी.डी.बी. बैंक के दक्षिण जोन के प्रबंधक श्री पी.डी. सारस्वत एवं श्रीमती सारस्वत ने अपने लखनऊ के प्लॉट को बेचकर 24 लाख रुपये का व्यक्तिगत अनुदान शांतिकुंज को देने का संकल्प लिया।

सभी हिंदी भाषी समाजों का समन्वित प्रयास

चेन्नई में रहने वाले प्राय: सभी हिंदी भाषी समाजों का संगम इस महायज्ञ में हुआ। माहेश्वरी, अग्रवाल, सिरवी, पटेल, छीपा, माली, कुमावत, गुजराती आदि समाजों के लोगों ने उत्तम पारिवारिक भावना का प्रदर्शन करते हुए कार्यक्रम की सफलता में सराहनीय योगदान दिया। सभी ने युगशक्ति गायत्री को समय की माँग बताते हुए मिलकर इसके व्यापक विस्तार का संकल्प लिया। वे अपने-अपने समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने के लिए भी उत्साहित हैं।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी युग चेतना ट्रस्ट शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा सेंचुरी ऑफसेट प्रिंटर्स,ऋषिकेश में मुद्रित। संपादक - वीरेश्वर उपाध्याय, पताः- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तरा.) पिन 249411. फोन- (01334) 260602, 261955 फैक्स - 01334-260866

सदस्यता, पूछताछ आदि के लिए फोन नम्बर - 09258369725, 01334-260602 एक्सटेंशन 167 से प्रातः 8 से सायं 5 के बीचे संपर्क करें।

RNI-NO.38653/80
R.No.UA/DO/16/2009-11
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT
vide No. WPP/04/05
RENEWED UP TO 2011